दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण

(भारत का नं. 1 महापत्तन)

लहरों का राजहंस

23वाँ अंक

जनवरी, 2022 - जून, 2022

राजभाषा कीर्ति पुरस्कार (14 सितंबर 2022)

सफलता की नयी ऊंचाईयों को निरंतर हासिल करते हुए - दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण

वर्ष 2021-22 के दौरान 127 मिलियन मीट्रिक टन नौभार का प्रहस्तन कर
लगातार 15 वर्षों से सभी महापत्तनों में सबसे आगे - दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण

राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में सर्वोच्च पुरस्कार ''राजभाषा कीर्ति पुरस्कार''

दिनांक 14 सितंबर 2022 को सूरत में आयोजित हिंदी दिवस समारोह एवं द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में श्री सी. हरिचंद्रन, सचिव-डीपीए ने माननीय केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा के करकमलों से राजभाषा कीर्ति पुरस्कार ग्रहण किया । श्री एस. के. मेहता, अध्यक्ष, श्री नंदीश शुक्ल, उपाध्यक्ष, विभाग प्रमुखगण एवं अन्य अधिकारीगण राजभाषा कीर्ति पुरस्कार के साथ ।

अध्यक्ष महोदय का सन्देश

श्री संजय कुमार मेहता
भा.व.से.
अध्यक्ष, दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण

प्रिय साथियों,

दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण की हिंदी गृह पत्रिका 'लहरों का राजहंस' के तेईसवें अंक के माध्यम से पुन: आप सभी से संवाद स्थापित करते हुए अत्यंत हर्ष एवं आनंद की अनुभूति हो रही है। दीनदयाल पत्तन राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भारत सरकार द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु सदैव प्रयासरत रहता है। दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण को गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा लगातार तीसरे वर्ष 2021-22 के लिए अखिल भारतीय स्तर पर राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में सर्वोच्च पुरस्कार अर्थात राजभाषा कीर्ति पुरस्कार के तहत भारत सरकार के बोर्ड/स्वायत्त निकाय/ट्रस्ट/सोसायटी आदि कार्यालयों की श्रेणी में भाषा-भाषी 'ख' क्षेत्र के लिए तृतीय पुरस्कार दिनांक 14 सितंबर 2022 को प्रदान किया गया है। इस उपलब्धि के लिए दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी सराहना के पात्र हैं। इसके अलावा दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण कंडला/गांधीधाम की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) की अध्यक्षता के दायित्व को भी श्रेयस्कर ढंग से निभा रहा है और नगर में स्थित केंद्र सरकार के कार्यालय नराकास की गतिविधियों में अपना योगदान देकर इसके गठन के उद्देश्य को पूरा करने में अपना सहयोग दे रहे हैं।

दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण गत वर्ष की संगत अवधि की तुलना में 6.96% की वृद्धि दर्ज करते हुए 28 दिसंबर, 2022 तक तीन तिमाही अवधि के भीतर ही 100 मिलियन मीट्रिक टन नौभार प्रहस्तन के आंकड़े को पार करते हुए सभी महापत्तनों में अपनी नंबर एक पोर्ट की स्थिति को बनाए रखा है। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि पत्तन के अधिकारियों, कर्मचारियों और प्रयोक्ताओं सहित सभी के संगठित प्रयासों से हम न केवल इस वर्ष भी इस उपलब्धि को बनाये रख पाने में सक्षम होंगे बल्कि इसे और अधिक ऊँचे स्तर तक ले जा पाएंगे और देश की आर्थिक प्रगति में अपने संगठन की ओर से बहुमूल्य योगदान भी कर पाएंगे।

मुझे यह कहते हुए गर्व का अनुभव होता हैं कि दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण अपने सामाजिक और राष्ट्रीय दायित्वों का बखूबी निर्वहन कर रहा है। दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण के प्रयासों को हर पटल पर सराहा गया है। इसके लिए मैं आप सभी को बधाई देता हूँ। दीनदयाल पत्तन के अनवरत विकास और उत्कृष्टता को बनाए रखने का संकल्प आप सभी की सक्रिय भागीदारी से ही संभव है। यह आवश्यक है कि हम सभी एक जुट होकर दीनदयाल पत्तन की समृद्धि, प्रगति और निरंतर विकास में सक्रिय रूप से सहभागी बनें। अंत में हिंदी गृह पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सफल प्रयासों की मैं सराहना करता हूँ और उन्हें बधाई देता हूँ, साथ ही आशा करता हूँ कि पत्रिका अपने प्रकाशन के उद्देश्य में सफल सिद्ध होगी।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित, जय हिंद।

उपाध्यक्ष महोदय का सन्देश

श्री नंदीश शुक्ल, आई.आर.टी.एस.
उपाध्यक्ष
दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण

हिन्दी गृह पत्रिका ''लहरों का राजहंस'' के तेईसवें अंक का प्रकाशन किया जाना दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण में राजभाषा हिन्दी की प्रगति में एक बढ़ता चरण है । दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन में हमेशा अग्रणी बने रहने का प्रयास करता रहा है, पत्रिका का प्रकाशन इस प्रयास का एक अभिन्न अंग है । हिन्दी गृह पत्रिका के माध्यम से पत्तन में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपनी रचनाधर्मिता लोगों के समक्ष प्रस्तुत करने का मंच प्राप्त होता है, साथ ही अपना मौलिक साहित्य सृजित करने की प्रेरणा भी मिलती है । पत्रिका को हार्ड कॉपी के बजाय डिजिटल प्रारुप में ई-बुक इत्यादि के रूप में प्रकाशित करने के सरकारी निर्देश के अनुपालन में इस अंक को भी ई-पत्रिका के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है । सभी पाठकगण इसे दीनदयाल पत्तन की आधिकारिक वेबसाइट पर जाकर पढ़ सकते हैं । ई-पत्रिका के रूप में हिंदी पत्रिकाओं की उपलब्धता से इंटरनेट पर हिंदी की विषयवस्तु में अत्यधिक बढ़ोत्तरी हो सकेगी ।

दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की ओर से लगातार तीसरे वर्ष 2021-22 के लिए राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन हेतु भारत सरकार के बोर्ड/स्वायत्त निकाय/ट्रस्ट/सोसायटी आदि कार्यालयों की श्रेणी में ''ख'' क्षेत्र में ''राजभाषा कीर्ति पुरस्कार (तृतीय)'' दिनांक 14 सितंबर 2022 को प्रदान किया गया है और इसके लिए पत्तन के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी प्रशंसा के पात्र हैं । कंडला/गांधीधाम क्षेत्र की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षता के दायित्व का निर्वहन भी दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण द्वारा भलीभांति सफलतापूर्वक किया जा रहा है ।

दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सहयोग से ही पत्तन में राजभाषा नीति का शत-प्रतिशत सफल कार्यान्वयन संभव है । इस कार्य में पत्तन के अधिकारी और कर्मचारी पहले से ही अपना योगदान करते आ रहे हैं । मुझे आशा ही नहीं वरन पूर्ण विश्वास है कि पत्तन के कामकाज में राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए अपने संवैधानिक उत्तरदायित्व को समझते हुए सभी अधिकारी और कर्मचारी अपना योगदान आगे भी बढ़-चढ़ कर देते रहेंगे । इस पत्रिका के माध्यम से पत्तन के अधिकारी कर्मचारी और उनके परिजन अपनी मौलिक सृजन क्षमता को सबके साथ साझा कर सकते हैं और एक-दूसरे के विचारों को जान-समझ सकते हैं ।

मैं, पत्तन के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से अपील करूंगा कि अपने दैनिक कार्यालयीन काम-काज में अधिक से अधिक राजभाषा हिंदी का प्रयोग करते हुए एवं तत्संबंधी सभी नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करते हुए संघ सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन में किये जा रहे दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण के प्रयासों को मजबूती प्रदान करें ताकि हमारे प्रयासों को मान्यता प्राप्त हो सके और आने वाले वर्षो में भी पुन: दीनदयाल पोर्ट को मंत्रालय एवं राष्ट्रीय स्तर पर राजभाषा पुरस्कार प्राप्त हो सकें । इस अंक में अपनी रचनाधर्मिता का उदाहरण पेश करने वाले एवं प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का अभिनंदन करते हुए आप सभी को बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएँ ।

जय हिंद,

सचिव महोदय का सन्देश

श्री सी. हरिचंद्रन
सचिव
दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण

दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण की हिंदी गृह पत्रिका ''लहरों का राजहंस'' के तेईसवें अंक के माध्यम से आप सब के सम्मुख अपनी बात पुन: रखते हुए हार्दिक प्रसन्नता हो रही है । मुझे यह बताते हुए गौरव का अनुभव हो रहा है कि दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण को लगातार तीसरे वर्ष 2021-22 के लिए राष्ट्रीय स्तर का राजभाषा कीर्ति पुरस्कार (तृतीय) प्राप्त हुआ है । हिंदी गृह पत्रिका का प्रकाशन दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण की नियमित गतिविधियों का एक महत्वपूर्ण अंग है जो राजभाषा कार्यान्वयन की गति को तीव्रता प्रदान करती है । आशा है कि पिछले अंकों की तरह यह अंक भी आप सभी को अच्छा लगेगा और आप सभी इसे सराहेंगे ।

केंद्र सरकार के पत्तन, पोत-परिवहन एवं जलमार्ग मंत्रालय के अधीन एक स्वायत्त निकाय होने के नाते दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण भारत सरकार द्वारा लागू सभी नीतियों का अनुपालन करना अपनी संवैधानिक जिम्मेदारी समझता है और भारत सरकार की राजभाषा नीति का कार्यान्वयन जिम्मेदारीपूर्वक निष्पादित कर रहा है । जैसा कि अवगत है कि संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी को अपनाया गया है अत: हम सबको अपना कार्य यथासंभव हिंदी में करना चाहिए ताकि संविधान की मूल भावना का पालन हो सके । कहने की आवश्यकता नहीं है कि जनता की भाषा में सरकारी कामकाज करने से विकास की गति और तेज होगी और पारदर्शिता आयेगी ।

राजभाषा हिंदी में सरकारी कामकाज को बढ़ावा देने के लिए सरकार की नीति प्रेरणा और प्रोत्साहन की रही है, जिसका अक्षरश: अनुपालन दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण में भी हो रहा है । दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण में सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए कई प्रोत्साहन योजनायें लागू हैं । इसके अलावा हिंदी दिवस/पखवाड़ा का आयोजन, नियमित हिंदी प्रशिक्षण कार्यशालाओं के आयोजन के साथ-साथ लेखन आदि के क्षेत्र में रूचि रखने वाले दीनदयाल पत्तन के अधिकारियों, कर्मचारियों एवं उनके परिजनों के लिए अपनी सृजनात्मक क्षमता का सार्वजनिक स्तर पर प्रदर्शन कर पाने में सहायता हेतु हिंदी गृह पत्रिका का छमाही प्रकाशन भी किया जाता है । इन सब का उद्देश्य दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देना है । दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण कंडला/गांधीधाम क्षेत्र की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षता के दायित्व का भी बखूबी निर्वहन कर रहा है ।

दीनदयाल पतन प्राधिकरण राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त कर रहा है तथापि इस क्षेत्र में सतत प्रयास जारी रखने की आवश्यकता है ताकि दीनदयाल पत्तन राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में शीर्षतम बिंदु को भी स्पर्श कर सके । मुझे पूर्ण विश्वास है कि यदि दीनदयाल पत्तन के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी अपने सक्रिय एवं समर्पित प्रयास करेंगे तो यह अवश्य संभव हो सकेगा मैं आप सभी से अनुरोध करता हूँ कि अपने दैनिक कार्यालयीन कामकाज में अधिक से अधिक राजभाषा हिंदी का प्रयोग करते हुए एवं तत्संबंधी सभी नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करते हुए संघ सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन में किये जा रहे दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण के प्रयासों को मजबूती प्रदान करें ताकि हमारे प्रयासों को मूल्यांकन के सभी स्तरों पर मान्यता और सम्मान प्राप्त होता रहे । इस अंक में अपनी रचनाधर्मिता का उदाहरण पेश करने वाले एवं प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का अभिनन्दन करते हुए आप सभी को पुनश्च बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएँ, जय हिन्द ।

लहरों का राजहंस

23वाँ अंक

जनवरी 2022-जून 2022

मुख्य संरक्षक

श्री संजय कुमार मेहता, भा.व.से., अध्यक्ष

संरक्षक

श्री नंदीश शुक्ल, आई.आर.टी.एस. उपाध्यक्ष

मार्गदर्शक मंडल

श्री सी. हरिचंद्रन, सचिव

श्री प्रदीप महान्ति, उप संरक्षक

श्री बी. भाग्यनाथ, वि.स. एवं मु.ले.अ.

श्री जी.आर.वी. प्रसाद राव, यातायात प्रबंधक

डॉ. अनिल चेलानी, मुख्य चिकित्सा अधिकारी

श्री वी. रवीन्द्र रेड्डी, मुख्य अभियंता

श्री ए. रामास्वामी, मुख्य प्रचालन प्रबंधक

श्री सुशीलचंद्र नाहक, उप मुख्य यांत्रिक अभियंता

संपादक

श्री शैलेन्द्र कुमार पाण्डेय, वरिष्ठ सहायक सचिव

उप-संपादक

डॉ. महेश बापट, वरि. उप मुख्य चिकित्सा अधिकारी

श्री ओम प्रकाश दादलानी, जनसंपर्क अधिकारी

श्री राजेश रोत, उप सामग्री प्रबंधक

सहायक संपादक मंडल

श्री वेदरुचि आचार्य, सहायक प्रशासनिक अधिकारी

श्री राजेन्द्र पाण्डेय, वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक

सुश्री इशरावती यादव, हिन्दी अनुवादक

श्री हरीश बचवानी, वरिष्ठ लिपिक

सम्पादकीय

श्री शैलेन्द्र कुमार पाण्डेय

वरिष्ठ सहायक सचिव एवं

संपादक, लहरों का राजहंस

दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण की हिंदी गृह पत्रिका ''लहरों का राजहंस'' का तेइसवां अंक भी राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार आपके सम्मुख ई-पत्रिका के रूप में प्रस्तुत करते हुए अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। इसे आप दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण की वेबसाइट और राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर जाकर पढ़ और डाउनलोड कर सकते हैं।

हिंदी गृह पत्रिका ''लहरों का राजहंस'' के माध्यम से दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण में सेवारत अधिकारियों, कर्मचारियों एवं उनके परिजनों की रचनात्मकता एवं उनके विचारों का प्रवाह आप सबके सामने प्रस्तुत किया जाता है। साथ ही पत्रिका का प्रकाशन दीनदयाल पत्तन में संघ सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के तहत हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने के लिए उठाया जाने वाला एक महत्वपूर्ण कदम भी है।

दीनदयाल पत्तन, राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप प्रदर्शन कर रहा है। सभी अधिकारियों और कर्मचारियों के एकजुट प्रयासों से दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण ने लगातार तीसरे वर्ष राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2021-22 के लिए 'राजभाषा कीर्ति' (तृतीय) पुरस्कार प्राप्त किया साथ ही नराकास स्तर पर भी उत्तम कार्य निष्पादन कर रहा है। अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रेरित और प्रोत्साहित करने के लिए कई प्रोत्साहन योजनायें लागू हैं, जिनमें पर्याप्त संख्या में सहभागिता की जा रही है। दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सहयोग से ही पोर्ट में राजभाषा नीति का शत-प्रतिशत सफल कार्यान्वयन संभव है। आशा ही नहीं वरन पूर्ण विश्वास है कि राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार करने में पोर्ट की संवैधानिक जिम्मेदारी के निर्वहन में पोर्ट के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों का योगदान आगे भी बढ़-चढ़ कर मिलता रहेगा। इस पत्रिका के माध्यम से अधिकारी, कर्मचारी और उनके परिजन अपनी मौलिक सृजन क्षमता को साझा कर सकते हैं और एक दूसरे के विचारों को जान-समझ सकते हैं।

सरकारी/सरकार नियंत्रित कार्यालयों में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी अधिकारियों के स्तर से लेकर कर्मचारियों के स्तर तक होना अपेक्षित है। अत: सभी अधिकारियों से विनम्र अनुरोध है कि राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति पर निगरानी रखना एवं अधीनस्थ सहकर्मियों को अपने दैनिक कार्यालयीन कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए प्रेरित, प्रोत्साहित करना एवं उत्तरदायी बनाना भी अत्यावश्यक है। दीनदयाल पोर्ट में कार्यरत प्रत्येक अधिकारी और कर्मचारी से विनम्र अनुरोध एवं आग्रह है कि अन्य क्षेत्रों की तरह ही राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भी अपना सर्वोत्तम योगदान एवं सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित करते रहें ताकि संगठित एवं एकजुट प्रयास से प्रबंध तंत्र की अपेक्षानुसार राजभाषा कार्यान्वयन के शीर्षस्थ बिंदु को आगे भी स्पर्श किया जा सके।

सतत सहयोग हेतु प्रबंधन के प्रति, साथ ही साथ सुविज्ञ एवं सुधी पाठकों के प्रति तथा अपनी रचनाएं देने वाले अधिकारियों, कर्मचारियों एवं उनके परिजनों के प्रति हृदय तल से आभार प्रकट करते हुए आप सभी को शुभकामनाएं देता हूँ।

अस्वीकरण : पत्रिका में लेखकों के अभिव्यक्त विचारों से पत्तन प्राधिकरण एवं संपादक मंडल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। पत्रिका में उल्लिखित नियम आदि के मूल पाठ को ही प्राधिकृत माना जायेगा।

अनुक्रमणिका

1.	आकाशवाणी	श्रीमती रानी कुकसाल	1
2.	मोहे छेड़े है चन्दरमा	श्रीमती रानी कुकसाल	3
3.	शास्त्रीय रागों का स्वास्थ्य और जीवन पर प्रभाव	श्रीमती ईला वेदांत	4
4.	हर घर तिरंगा	श्री कमल आसनानी	6
5.	महत्त्व	श्री गोपाल शर्मा	6
6.	असफलता सफलता से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण है	श्री कैलाश सासिया	7
7.	उलझन रिश्तों की	श्रीमती आरती निहलानी	8
8.	तिरंगा रक्तकण	श्रीमती जीया शहानी	8
9.	हिंदी भाषा प्यारी है	श्री हेमलता बी. पावागढ़ी	9
10.	सरकारी कर्मचारी	सुश्री दीक्षा राजपुरोहित	9
11.	गुण उत्तमता की पहचान	श्रीमती संगीता खिलवानी	10
12.	शक्ति पर्व	सुश्री यशस्विनी यादव	11
13.	जीवन की छाँव ''माता-पिता''	सुश्री विधि जे. जोषी	11
14.	हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2022-23 का वार्षिक कार्यक्रम	----------	12
15.	संदर्भाधीन अवधि के दौरान गतिविधियों की झलकियाँ	----------	14
16.	महिला सशक्तिकरण	सुश्री विधि जे. जोषी	18
17.	ऐ ज़िंदगी	श्री दिनेश आई. भूत	18
18.	ईमानदारी का फल	कु. प्रतीक भावनानी	19
19.	जग्गू की गृहस्थी	श्रीमती सोनिया जे. हेमनानी	20
20.	राष्ट्र निर्माण में विद्यार्थियों का योगदान	श्री हेमल सोनी	21
21.	लिखते हैं	सुश्री शाहु सुनैना कुमारी	22
22.	प्यारी कविता	श्रीमती लता जे. दवे	22
23.	मैं यहाँ तक आया हूँ	सुश्री दीक्षा राजपुरोहित	23
24.	अदरक के खास गुण	श्रीमती कल्पना वी. महेश्वरी	24
25.	फुटबॉल खेल	श्री यश जगदीश दवे	25
26.	अधूरा ख्वाब	कु. चिराग निहलानी	26
27.	आओ गणपति गणराज	श्रीमती रानी कुकसाल	27
28.	सारी सृष्टि के मालिक	श्रीमती पिन्की वी. प्रसाद	27
29.	इतने नरम मत बनो	सुश्री गीता त्रिपाठी	27
30.	महंगाई	श्रीमती पुष्पा बचवाणी	28
31.	प्रेरक प्रसंग : इंजीनियर मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया	सुश्री गीता त्रिपाठी	29
32.	प्रतीक्षा	श्रीमती ज्योति भावनानी	30
33.	ज़िंदगी का सफ़र..	श्रीमती कृपा वेलानी	30
34.	गाँव	श्रीमती ज्योति भावनानी	31
35.	कलम	सुश्री शिवानी रावल	32
36.	प्रेम की राह	श्रीमती गोपी के. पांडे	33
37.	ईश्वर आज अवकाश पर है ।	श्रीमती राजेश पी. सिंह	33
38.	जो नहीं हो सके पूर्ण काम	सुश्री गीता त्रिपाठी	34

आकाशवाणी

श्रीमती रानी कुकसाल
वरिष्ठ लिपिक, वित्त विभाग

प्रस्तावना :-

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है । पल-पल की घटना को जानने तथा तदानुरूप अपना मंतव्य प्रकट करने और प्रतिक्रिया देने का वह आदी होता है । उसकी सचेतन मस्तिष्क तरंगे यत्र-तत्र सर्वत्र किसी न किसी प्रकार का समाचार ढूंढती रहती है । वह कभी यथावत समाचार प्रस्तुत करता है कभी मिर्च मसाले के साथ और ग्रहणकर्ता भी कभी यथावत उसे मौन रहकर स्वीकार करता है कभी उसे झूठा सिद्ध करके विरोध करता है ।

समाचार ! समाचार क्या है जनाब ?
कभी किसी का इश्क बना समाचार
कभी किसी का अश्क बना समाचार
कभी समाज का अक्स बना समाचार
कभी एक दुजे से रश्क बना समाचार
कभी युद्ध, कभी छदम, कभी सन्यासी
कभी प्रवासी, कभी खेल,
कभी खेल-खेल में, कभी समाज में अपराधीकरण,
कभी अपराधी की जयकार बना समाचार,
अजी यह जगत स्वयं ही है जीता जागता समाचार ।

(स्वरचित)

व्याख्या / परिभाषा : किसी भी घटना का घटित होना जो आम जनता पर प्रभाव डाले वह समाचार है ।

आरंभिक दौर :- 24 दिसम्बर 1906 को जब कैनाडाई वैज्ञानिक रोगिनाल्ड फर्सेंडेन ने अपना वायलिन बजाया और महासागर पर तैर रहे समस्त जहाजों के रेडियो ऑपरेटरों ने एक साथ उस संगीत को अपने रेडियो पर सुना तब से रेडियो को प्रसारण दृष्टिगोचर हुआ पर वास्तविकता यह है कि सन 1900 में भारत के जगदीशचंद्र बसु ने पहले ही बेतार संदेश भेजकर व्यक्तिगत रेडियो स्टेशन का आविष्कार कर लिया था ।

स्वतंत्रतापूर्व की स्थिति और रेडियो समाचार :-

विविध स्वतंत्रता संग्रामों के कारण अंग्रेजों की सत्ता हिलने लगी थी । ऐसे में विविध अन्याय को दबाने की मंशा से रेडियो समाचारों को पराधीन रखा गया था 1939 में द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद भारत में भी रेडियो प्रसारण का लाइसेंस रद्द कर दिये गए और ट्रांस्मीटरो को सरकारों को जमा करवाने का फरमान जारी किया गया । उस समय बॉम्बे टेकनिकल इंस्टीट्यूट के प्रिंसिपल नरिमन प्रिंटर ने अपने ट्रान्समीटर के पुर्जे खोलकर छिपा दिये थे किन्तु बाद में कॉग्रेस के कुछ नेताओं के अनुरोध पर उन्होंने पुन: सारे कलपुर्जे जोड़कर नए सिरे से प्रसारण आरंभ किया । सन् 1942 में प्रथम प्रसारण के समय उद्घोषक उषा मेहता ने कहा कि 41.78 मीटर पर एक अंजान जगह से यह नेशनल कांग्रेस रेडियो है । सन् 1941 में सुभाषचंद्र बोस जी के द्वारा युवाओं को सम्बोधित करती ध्वनि रेडियो से प्रसारित हुई थी कि तुम मुझे खुन दो मैं तुम्हे आजादी दूंगा । सन 1942 में पहले जर्मनी से फिर रंगून से भारतीयों के लिये रेडियो समाचार प्रसारित हुए ।

स्वतंत्रता के पश्चात की स्थिति :-

सरकारी संरक्षण में रेडियो का काफी प्रचार-प्रसार हुआ । 1947 में आकाशवाणी के 6 रेडियो स्टेशन थे और महज 11% लोगों तक इसकी पहुँच थी पर आज आकाशवाणी के पास 223 रेडियो स्टेशन है तथा 99% लोगों तक उसकी पहुँच है । रेडियो के समाचारों पर सरकार पाबंदी लगाकर उसके दुरुपयोग को रोकना चाहती है । लेकिन वर्ष 2006 में सरकारों द्वारा उक्त पाबंदियों में ढील देते हुए आम जनता तक इसकी पहुँच बढ़ाई गई । दूरदर्शन के कारण उसकी घटती लोकप्रियता को एफएम के जरिये कुछ हद तक रोका गया ।

रेडियो पर समाचारों का प्रसारण :- ऑल इंडिया रेडियो न्यूज सर्विस संसार के समाचार संगठनों में सबसे बड़ा संगठन है। इसके द्वारा प्रसारित समाचारों को विविध आयामों से गुजरना पड़ता है, यथा –

1. विविध बुलेटिनों में विभक्त समाचार

रेडियो समाचार बुलेटिनों का निर्धारण किया जाता है। अर्थात प्रात: कालीन दोपहर का और सायंकालीन समाचार बुलेटिन निर्धारित किये जाते है। 24 घंटो में 3 से 4 लाख शहरों के समाचारों के संकलन का कार्य प्रमुख सम्पादक आदि उसके सहयोगी सम्पादक द्वारा किया जाता है समाचार रिपोर्टर तो हजारों शहरों की विस्तृत घटना को झोली में भरकर लाता है पर उसे संक्षिप्त और विषय सम्बद्ध रूप में समेटकर उसका सार हासिल किया जाता है। उसे सुन्दर सटीक शीर्षक देकर बुलेटिनों को प्रेषित किया जाता है। अर्थात एक रिपोर्टर बटोरता है, संपादक सहेजता संवारता है, लेखक लिखता है और वाचक पढ़ता है।

2. समाचारों के अनुवाद :

समाचार मुख्यत: राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय या प्रादेशिक रूप में प्रसारित होते हैं। प्रादेशिक समाचारों में स्थानीय समाचार आदि भाषा का चयन किया जाता है जिसकी प्रसिद्धि सीमित होती है। राष्ट्र के सभी प्रदेशों से समाचारों को एकत्रित करके उसे हिन्दी या अंग्रेजी में अनुदित करके प्रस्तुत करके बृहद आकार दिया जाता है वहीं अंतर्राष्ट्रीय समाचारों में संपूर्ण राष्ट्र के समाचारों को अंग्रेजी में प्रसारित किया जाता है जिसमें प्रदेशनाम गौण हो जाता है और विविध राष्ट्रो के नाम मुख्य हो जाते हैं।

3. समाचारों की भाषा :-

रेडियो समाचार की भाषा सरल और सर्वग्राह्य होनी चाहिये। रेडियो एक श्राव्य यंत्र है और इसमें दर्शकों को सुनने का बेसब्री से इंतजार होता है अत: रिक्त स्थान रखकर अधिक इंतजार नहीं करवाया जा सकता अन्यथा उबकर दर्शक के हटने की संभावना होती है। वाक्य सीधे और स्पष्ट होने चाहिये। शब्द बाण की भांति अपने स्थान पर चोट देने वाले होने चाहिये। शब्द चयन ऐसे नहीं होने चाहिये जो असंवेदनशीलता और भ्रामक परिस्थिति के जनक हो बल्कि व्यंग्यात्मक प्रहार से परे रहने चाहिये। 90 से 100 शब्दों में सिमटा एक समाचार हो ताकी रोचकता बनी रहे।

रेडियो समाचार – लेखक की विशेषता

– रेडियो समाचार लेखक और सृजनात्मक लेखक में अंतर होता है। सृजनात्मक लेखक प्रस्तावना से लेख का आरम्भ करता है समाचार लेखक मुख्य समाचार से।

– सृजनात्मक लेखक में कल्पना के पुर का समावेश होता है जबकि समाचार लेखन सत्य के धरातल पर खड़ा रहता है।

– समाचार लेखक गेट कीपर का कार्य करते हैं। समाचार लेखक और संवाददाता मुख्य द्वारपाल माने जाते हैं जो समाचारों को संयोजित और संकलित करके मन मस्तिष्क में पैठ करवाते हैं।

– समाचार बुलेटिन 15 मिनट से 30 मिनट तक के होते हैं अत: मुख्य समाचारों का प्रथम स्थान और शेष समाचारों को उसके बाद प्रसारित किया जाता है। कई बार किसी बड़ी घटना को खण्डों में विभक्त करके विविध बुलेटिनों में सुनाया जाता है यथा वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर की घटना को कुछ दिनों तक समाचार बनाकर अनेक बुलेटिनों में प्रसारित किया गया था।

– सारे समाचार ध्वनि के माध्यम से प्रसारित होते हैं अत: श्रोताओं को बांधे रखने का प्रयास किया जाता है।

रेडियो समाचारों की विश्वसनीयता :-

रेडियो श्राव्य माध्यम से समाचारों का प्रसारण करता है अत: नियत समय में ही समाचार प्रसारित करने को बाध्य होता है। अत: इन्टरव्यूं के ढंग भी भिन्न होते हैं। अर्थात् बातचीत के अंदाज में महेमानों के इंटरव्यूं लिये जाते हैं।

प्लास्टिक है जीवन का दुश्मन, आओ मिलकर इस दुश्मन को हटाए।

विश्वसनीयता का विशेष ध्यान रखा जाता है क्योंकि विश्वसनीयता के अभाव में लोकप्रियता बाधित होती है। ऑलइंडिया की ओर से कुल 27 न्यूज बुलेटिन प्रसारित किये जाते है यथा UNITED NEWS OF INDIA (UNI), PRESS TRUST OF INDIAN (PTI) और यूनिवार्ता आदि न्यूज एजेंसियों का प्रादुर्भाव रहा है।

श्राव्य माध्यम को चुनौती :-

रेडियो श्राव्य माध्यम है। इसके द्वारा प्रसारित होने वाले समाचार ध्वनि और संगीत से भी सज्ज होते हैं। टेलीविजन के कारण इसमें लोगों का रस थोड़ा फीका तो हुआ पर फिर भी संकलनकर्ताओं के सूझबूझ के कारण नित नवीन संशोधन लाने का प्रयास किया जाता है।

उपसंहार :- आज भी रेडियो अपने पुरातन प्रेमियों के हृदय में अनोखे अंदाज में जीवित है। मैं विनोद कश्यप प्रात:कालीन बुलेटिन में आपका स्वागत करता हूँ। रामानुज प्रसाद सिंह और सुशील जवेरी भी मनमस्तिष्क में चिर-स्थाई जगह बनाए हुए हैं। समाचार समाप्ति पर टु - टु - टु - टु की आवाज आज भी कानों में गुंजती है और वही बचपन की यादे दिमाग में कुलांचे भरने लगती हैं। रेडियो जिसे बिना इंटरनेट और विशेष संसाधन के आसानी से चलाया जा सकता था। किसी समय उसका होना ही रईसी का पर्याय होता था। दिल की धड़कन कुछ पल के लिये रुक गई थी जब विनोद कश्यप ने लालबहादुर शास्त्री के निधन का समाचार सुनाया और आलमारी के कोने में बैठा रेडियो उछलकर उस वक्त कान से सट आया था जब समाचार में इंदिरा गांधी की हत्या की खबर को सुनाया गया था। खर-खर-खर-खर की आवाज पर समाचार में व्यवधान नागवार लगता और हाथ का निवाला त्यागकर लोग उसके रेग्युलेटर को घुमाने लगते थे। समाचार प्रसारण के समय अभिभावक आँख और अंगुली के इशारे से चुप रहने को कहते और बच्चे बड़ी बेसब्री से टु-टु-टु का इंतजार करते। कभी युद्ध का समाचार सुनाता। कभी राजनीति की खबर सुनाता। शनै: शनै: आँखों देखा हाल सुनाने वाला संजय 2001 में कच्छ पहुँचा जब भूकम्प की तबाही से त्राहीमाम करती जनता का पल-पल का हाल संवाददाता योगेश पंडया द्वारा सुनाया गया अैर उन्हें सर्वश्रेष्ठ संवाददाता का पुरस्कार प्राप्त हुआ।

जिस रेडियो की हमें जरूरत थी आज वही रेडियो हमारा सम्बल और साथ चाहता है। न्यायपालिका, कार्यपालिका, विधायिका और प्रचार माध्यम इन चार स्तंभो में सबसे महत्वपूर्ण स्तम्भ चौथा स्तंभ अर्थात प्रचार माध्यम को माना जाता है।

''तू सच को देख, परख और लिख, पर सच को थोड़ा सा ढंकना भी सीख,
गर तलवार खिंच गई तो खरोंच का जिम्मा समाचार लेखक, के माथे पर लिखा जाएगा।''

मोहे छेड़े है चन्दरमा

श्रीमती रानी कुकसाल
वरिष्ठ लिपिक, वित्त विभाग

सखी मैं ना जाऊं छत पे मोहे छेड़े है चन्दरमा

कारी अंधियारी रतिया में चुपके से वो आता
हीरे जैसे जगमगजगमग तारों का संग लाता
देख के मेरा सुन्दर मुखड़ा वो कुछ यूँ मुस्काता
ठिठकी-सी रह जाऊं पलभर काहे छेड़े है चन्दरमा
सखी मैं ना जाऊं छत पे मोहे छेड़े है चन्दरमा

जब सोऊ मेरी पलकों पर चुम्बन वो जड़ जाता
कभी वो बिंदियां बनकर माथे से लग जाता
और कभी तारों की पैंजनियां मुझको पहनाता
मुझ पर प्रीत लुटाता बलबल मन को मोहे चन्दरमा
सखी मैं ना जाऊं छत पे मोहे छेड़े है चन्दरमा

चाँदनी का बना गलीचा छत पर मेरी बिछाता
और कभी वो मुझे देखकर बादलो में छिप जाता
दूज को डोली बनकर चन्दा मेरी छत पर आता
आजा तुझे ले चलूँ सैर पर फरमाता है चन्दरमा
सखी मैं ना जाऊं छत पे मोहे छेड़े है चन्दरमा

कभी नींद में खो जाऊं तो ओस से मुझे भिगाता
तारो की कंकरी मारकर नींद से मुझे जगाता
और कभी मेरे सपने में यदि राजकुँवर कोई आता
तो मर जाता है वो जल-जल बड़ा बैरी है चन्दरमा
सखी मैं ना जाऊं छत पे मोहे छेड़े है चन्दरमा

''हिंदी जैसी सरल भाषा दूसरी नहीं है।'' - मौलाना हसरत मोहानी

शास्त्रीय रागों का स्वास्थ्य और जीवन पर प्रभाव

श्रीमती इला वेदांत
वरिष्ठ लिपिक
सिविल अभियांत्रिकी विभाग

भारतीय संस्कृति को अपनी परंपराओ, विशालता एवं जीवंतता के कारण सर्वत्र सराहा गया है और उसे सभी संस्कृतियों में सर्वश्रेष्ठ माना गया है । किसी भी संस्कृति की संवाहक है कलाएं । कलाएं मनुष्य को सकारात्मक प्रवृति, उल्लासमय जीवन और उत्साहित करने के लिए सदैव प्रेरित करती हैं । सभी कलाओं में से ललित कलाओं को उत्कृष्ट माना गया है और ललित कलाओं में संगीत का स्थान सर्वोपरि है ।

संगीत एक ऐसी विद्या है जो मानव-चित्त पर अटल छाप छोड़ती है । संगीत का जन्म वैदिक युग से हुआ है । संगीत ईश्वर प्राप्ति का सर्वोत्तम साधन है । ऋग्वेद में ऐसा कहा गया है कि यदि आप संगीत के साथ ईश्वर को पुकारेंगे तो वह आपके मन में प्रकट होकर अवश्य कृपा करेंगे ।

भारतीय शास्त्रीय संगीत रागों पर आधारित है । प्रत्येक राग का अपना विशेष वातावरण, स्वभाव एवं प्रभाव है। शास्त्रीय रागों का मनुष्य, प्राणियों एवं वनस्पतिओं पर बहुत ही महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है । राग मानव-पशु-पक्षी-वनस्पति आदि को अपने रंग में रंग देता है जिससे वह प्रसन्न हो उठते हैं । भारतीय संगीत केवल मनोरंजन का साधन नहीं है अपितु इसका संबंध मानव प्रकृति एवं शरीर से भी रहा है । शास्त्रीय रागों का स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता देखा गया है ।

राग सात स्वरों में से उत्पन्न होते हैं। सात स्वर **सा, रे, ग, म, प, ध और नि** का शरीर पर विशेष प्रभाव पड़ता है। योग, शरीर के साथ चक्रों के बारे में बताता है । इन सात चक्रों पर संगीत के सात स्वरों का विभिन्न रूप से प्रभाव पड़ता है जो निम्न प्रकार से है ।

(1) सा.....मूलाधार (2) रे.....स्वाधिस्ठान (3) म.....मणिपुर
(4) म.....अनाहत (5) प.....विशुद्ध (6) ध.....आज्ञा
(5) नि.....सहस्त्र

यह सात स्वर सात चक्रों को सुचारु रखने में मदद करते हैं और शरीर को स्वस्थ रखने में सहायता करते हैं ।

शरीर विज्ञान के अनुसार सभी बिमारियाँ वात-पित्त-कफ के कारण होती हैं । इन दोषों के निवारण में शास्त्रीय राग विशेष भूमिका निभाते हैं । रागों से आध्यात्मिक सुख की अनुभूति होती है जिससे चिकित्सा में सहायता मिलती है । रागों के द्वारा रोगों की चिकित्सा में बहुत प्रयोग भी किये गये हैं । 20 वी सदी में पं. ओम्कारनाथ ठाकुर ने राम पुरिया के चमत्कारिक गायन से इटली के शासक मुसोलीनी को अनिद्रा के रोग से मुक्ति दिलाई थी । ''अल्ज़ाईमर'' (स्मरण शक्ति संबंधित रोग) के उपचार में राग थेरेपी बहुत ही फलदायी सिद्ध हुई है । राग शिवरंजनी के स्वरों में स्मरण शक्ति बढ़ाने का गुण है ।

वर्तमान समय में अधिकतर बिमारियाँ मानसिक तनाव, चिंता, अवसाद आदि से उत्पन्न हुई देखी गयी हैं । संगीत ऐसी विद्या है जो मानसिक संतुलन बनाये रखने में बहुत ही महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुई है । माइग्रेन (सिर दर्द) के

पल-पल प्लास्टिक घोल रहा जीवन में जहर, आओ सब मिलकर प्लास्टिक का त्याग करें ।

उपचार में राग बहुत ही मददरूप हैं। इस विषय में मेरा स्वयं का अनुभव बताना चाहती हूँ कि मेरी माइग्रेन की समस्या के हल में राग थेरेपी से 90% राहत मिली है और अब वह समस्या नहिवत-सी हो गई है।

यूं तो संगीत किसी भी समय सुना जा सकता है किंतु संगीत-थेरेपी के विषय में रागों को अपने समयानुसार सुनने से रोगों के इलाज में विशेष लाभ मिलता है क्यूंकि प्रत्येक राग का अपना विशेष स्वभाव होता है। आप रागों को गायन/वादन किसी भी रूप में सुन सकते हैं।

रागों के द्वारा चिकित्सा संगीत-चिकित्सा (म्यूजिक थेरेपी) कहलाती है। बच्चों में बोल नहीं सकने की समस्या हम अक्सर देखते हैं, इसके इलाज में संगीत थेरेपी का योगदान बड़ा ही महत्वपूर्ण रहा है। इस समस्या के इलाज में डॉक्टरर्स भी अभिभावकों को बच्चों को संगीत सिखाने की सलाह देते हैं। मुझे आप सबको यह बताते हुए बड़ी प्रसन्नता हो रही है कि एक 5 वर्षीय बालक, जिसको बोलने में बड़ी तकलीफ थी, वह केवल ''आ, आ'' बोल सकता था, उसके डॉक्टर ने म्युजिक थेरेपी लेने की सलाह दी और उसे शास्त्रीय गायन सिखाने के लिए कहा गया था, मेरे पास उस बालक ने संगीत सीखना शुरू किया और 1 वर्ष में वह अच्छी तरह गाने लगा तथा बात भी करने लगा और आज वह एक सफल इंजीनियर है।

मनुष्य के उपरांत पशु-पक्षी और वनस्पतिओं पर भी शास्त्रीय रागों का सकारात्मक प्रभाव देखा गया है। श्रीकृष्ण की बांसुरी के मधुर स्वर सुन के गाय अधिक दूध देती थी। पेड़-पौधों पर भी मधुर संगीत का प्रभाव पड़ता है और यह वैज्ञानकि रूप से सिद्ध भी हुआ है। मध्यप्रदेश के वन-विभाग में एक शोध हुआ है जिसमें वृक्ष प्रजातियों को प्रसिद्ध सितारवादक पं. रविशंकरजी के सितार की राग भैरवी में निबद्ध रचनाएं सुनाने से फलों व फूलों के बीज अंकुरित होने की दर में 80% वृद्धि पाई गई है।

यहाँ कुछ राग एवं उनके रोगों के इलाज में प्रभाव की जानकारी प्रस्तुत है।

	राग	**रोगों पर प्रभाव**
1.	भूपाली और मारवा	आंतों में मजबूती
2,	दरबारी और सारंग	हृदय रोग
3.	भैरव और सोहिनी	अनिद्रा
4.	खमाज	पित्त रोग
5.	जयजयवंती	कमजोरी
6.	शिवरंजनी	स्मरण शक्ति
7.	पीलू	रक्त की कमी
8.	बिहाग और मधुवंती	डिप्रेशन
9.	मालकौंस और ललित	साँस संबंधी रोग
10.	पहाड़ी	स्नायुतंत्र संबंधी रोग

इस प्रकार शास्त्रीय रागों का जीवन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है एवं वह विविध बिमारिओं में इलाज के दौरान राहत दिलाने और उसे दूर करने में महत्वपूर्ण योगदान देते है।

तो आइए हररोज कुछ समय शास्त्रीय संगीत गायन/वादन सुनें और स्वस्थ रहें।

हर घर तिरंगा

श्री कमल आसनानी
मुख्य चिकित्सा अधिकारी के
निजी सहायक

जश्ने-आज़ादी राष्ट्र का है सबसे बड़ा पर्व,
विरासत में मिली आज़ादी पर है हमें बड़ा गर्व,
कहीं पर रैलियाँ तो कहीं सभाएं, अद्भुत है नजारा हर तरफ,
मुबारक हो सबको ''आज़ादी का अमृत महोत्सव''

लेकिन याद रहे इस पर्व के पीछे है अनगिनत आहुतियां बेहिसाब बलिदानियाँ,
उजड़ी मांगे, सूने आंचल और शूरवीर शहीदों की कहानियाँ,
गाथाएं उन बहादुर सिपाहियों की जो अनेक बाधाओं के बावजूद रुके नहीं,
खाकर सीने पर गोलियाँ मर तो गए लेकिन कभी झुके नहीं

इसलिए विरासत में मिली आज़ादी हमें जान से भी ज्यादा है प्यारी,
किंतु इसे सलामत रखना अब है हम सब की जिम्मेदारी,
जिम्मेदारी का अर्थ ये नहीं कि हमें सीमा पर जाकर है बंदूक चलाना,
हमें तो है बस नियमों का पालन करना और ईमानदारी से अपना कर्तव्य निभाना

सुनिश्चित करें कि राष्ट्र विरोधी ताकतों की बातों मे हम आएं नहीं,
लाख प्रलोभन हो पर जयचंद बन दुश्मन से कभी हाथ मिलाएं नहीं,
परिवार, समाज, देश शर्मिंदा हो करना ऐसा कोई कर्म नहीं,
सारे धर्म अपनी जगह लेकिन देशभक्ति से बड़ा कोई धर्म नहीं ।

सरकारें आएंगी, सरकारें जाएंगी लेकिन हम हर हाल में अपना कर्तव्य निभाएंगे
न सिर्फ इस बरस किन्तु हर बरस आज़ादी के पर्व पर ''घर-घर तिरंगा लहराएंगे''
''हर-घर तिरंगा लहराएंगे''

महत्त्व

श्री गोपाल शर्मा
लेखा अधिकारी

सड़क चलते एक निराश मुसाफिर को जब एक पेड़ और शीतल घास दिखी तो वह सुस्ताने के लिए बैठ गया और जैसे ही शीतल घास पर पैर रखा उसे सुकुन मिला ।

उसे खुश देखकर पेड़ बोला, ''भाई ! तुम्हारे ऊपर पैर रखते ही लोगों के पाव ठण्डे हो जाते हैं देखो राहगीर कितने आराम से सो गया'' घास ने कहा, ''हाँ ! भाई पर तुम्हारी छाँव तले ही तो मैं ठंडक दे पाता हूँ वरना मैं इतनी धूप में सूख ही जाता'' दोनों की बाते सुनकर सड़क हंसते हुए बोली, ''अरे लेकिन जब तक कोई राहगीर मेरे ऊपर नहीं चलेगा तब तक वह तुम्हारे पास आ ही नहीं सकता, मैं जीवन की तापिश महसुस करवाती हूँ'' कहते हुए सड़क ने अट्टहास लगाया ।

बोधपाठ

''यदि जीवन में धूप-छाँव नहीं हो तो जीवन चल ही नहीं सकता''

असफलता सफलता से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण है

श्री कैलाश सासिया
सहायक–यातायात विभाग

सभी के जीवन में एक समय ऐसा आता है जब सभी चीज़ें आपके विरोध में हो रही हो और हर तरफ से निराशा मिल रही हो। चाहें आप एक प्रोग्रामर हैं या कुछ और, आप जीवन के उस मोड़ पर खड़े होते हैं जहाँ सब कुछ गलत हो रहा होता है। अब चाहे ये कोई सॉफ्टवेर हो सकता है जिसे सभी ने रिजेक्ट कर दिया हो या आपका कोई फैसला हो सकता है जो बहुत ही भयानक साबित हुआ हो।

लेकिन सही मायने में, विफलता सफलता से ज़्यादा महत्वपूर्ण होती है। हमारे इतिहास में जितने भी बिजनेसमेन, साइंटिस्ट और महापुरुष हुए हैं वो जीवन में सफल बनने से पहले लगातार कई बार फेल हुए हैं। जब हम बहुत सारे काम कर रहे हों तो ये ज़रूरी नहीं कि सब कुछ सही ही होगा। लेकिन अगर आप इस वजह से प्रयास करना छोड़ देंगे तो कभी सफल नहीं हो सकते।

हेनरी फ़ोर्ड, जो बिलियनेर और विश्वप्रसिद्ध फ़ोर्ड मोटर कंपनी के मालिक हैं। सफल बनने से पहले फ़ोर्ड पाँच अन्य बिज़नेस में फेल हुए थे। कोई और होता तो पाँच बार अलग–अलग बिजनेस में फेल होने और कर्ज़ मे डूबने के कारण टूट जाता। लेकिन फ़ोर्ड ने ऐसा नहीं किया और आज एक बिलिनेअर कंपनी के मालिक हैं।

अगर विफलता की बात करें तो थॉमस अल्वा एडिसन का नाम सबसे पहले आता है। लाइट बल्ब बनाने से पहले उसने लगभग 1000 विफल प्रयोग किए थे।

अल्बर्ट आइनस्टाइन जो 4 साल की उम्र तक कुछ बोल नहीं पाते थें और 7 साल की उम्र तक निरक्षर थे। लोग उनको दिमागी रूप से कमजोर मानते थे लेकिन अपनी थ्योरी और सिद्धांतों के बल पर वें दुनिया के सबसे बड़े साईंटिस्ट बने।

अब ज़रा सोचो कि अगर हेनरी फ़ोर्ड पाँच बिज़नेस में फेल होने के बाद निराश होकर बैठ जाते, या एडिसन 999 असफल प्रयोग के बाद उम्मीद छोड़ देते और आईनस्टाइन भी खुद को दिमागी कमजोर मान के बैठ जातें तो क्या होता ? हम बहुत सारी महान प्रतिभाओं और आविष्कारों से अंजान रह जाते।

तो मित्रों, असफलता सफलता से कहीं ज़्यादा महत्वपूर्ण है...

असफलता ही इंसान को सफलता का मार्ग दिखाती है। किसी महापुरुष ने बात कही है कि –

"Winners never Quit and Quitters never Win"
जीतने वाले कभी हार नहीं मानते और हार मानने वाले कभी जीत नहीं सकते

आज सभी लोग अपने भाग्य और परिस्थितियों को कोसते हैं। अब जरा सोचिये अगर एडिसन भी खुद को अनलकी समझ कर प्रयास करना छोड़ देते तो दुनिया एक बहुत बड़े आविष्कार से वंचित रह जाती। आइंस्टीन भी अपने भाग्य और परिस्थितियों को कोस सकते थें लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया तो आप क्यों करते हैं।

अगर किसी काम में असफल हो भी गए हो तो क्या हुआ ये अंत तो नहीं है ना, फिर से कोशिश करो, क्योंकि कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

मित्रों असफलता तो सफलता की एक शुरुआत है, इससे घबराना नहीं चाहिये बल्कि पूरे जोश के साथ फिर से प्रयास करना चाहिये....

उलझन रिश्तों की

श्रीमती आरती निहलानी
कनिष्ठ अभियंता (सिविल)

कुछ चाहे कुछ अनचाहे रिश्ते
रिश्तों पर किसका जोर है
टूट रहे हर जगह रिश्ते
अब बस...अब हर जगह इसी बात का शोर है ।

रिश्ते काँच सरीखे होते हैं
टूटकर बिखर ही जाते है
लेकिन समा ही ऐसा है
कि काँच समेटने की जगह
लोग नया काँच हीं ले आते हैं

कुछ रिश्ते उलझ जाते हैं
और सुलझ नहीं पाते हैं
इसी खीचा-तानी में
वो टूटकर बिखर जाते हैं
लेकिन समा ही ऐसा है
कि रिश्तों की परवाह नहीं
सिर्फ अंगारों में लिपटा अहम है
जिसे प्यार की दरकार नहीं

आदत इंसान की ऐसी है
एहसासों के जज्बातों को
कुछ यूं संजोके रखते हैं
मर जाए भी तो एहसास उनका
बस यूं हीं दफना देते हैं

बस अड़े रहें और खड़े रहें
मलाल नहीं रिश्ता खोने का
बस जिद्द है कि पहले वो करें
तो मजा ले फिर जिंदा रहने का ।

ख़ामोश हैं हम खामोश हो तुम
फासले यूं हीं बढ़ जायेंगे
खामोशी भी अब चाहे लब्ज
लबों पे आके ठहर जाती है

क्या...ये है घर-घर की कहानी
उसने कहा पर वो न मानी
तू-तू मैं-मैं और खींचातानी
और अहम की जंग है ठानी

जो समझे अहमियत रिश्तों की
वो तो रहे सदा ही अबला
जीवनभर बस उलझन में रहें
कि करे कैसे सामंजस्य सफला ।

तिरंगा रक्तकण

श्रीमती जीया शहानी
वरिष्ठ फार्मासिस्ट
चिकित्सा विभाग

आज़ादी कोई किस्सा तो नहीं,
जिसे पढ़कर भुला दिया जाए,
ये वो सर्वोच्च सम्मान है,
जिसे प्राण देकर भी बचा लिया जाए !

प्रजातंत्र कोई उपहार तो नहीं,
जिसे इस्तेमाल कर छोड़ दिया जाए,
ये वो मुबारक सिद्धि है,
जिसे लम्हा-लम्हा उन्नत बना दिया जाए !

गणतंत्र कोई समारोह तो नहीं,
जिसे एक दिन मनाकर टाल दिया जाए,
ये वो वर्ष का अति पावन पर्व है,
जिसे हर सुबह से शाम मना लिया जाए !

देश भक्ति कोई वस्त्र तो नहीं,
जिसे आज पहन कल उतार दिया जाए,
ये वो जुनूनी जज़्बा है,
जिसे 'तिरंगे रक्तकण' सा नस-नस में बहा दिया जाए !

हिंदी भाषा प्यारी है

श्रीमती हेमलता बी. पावागढ़ी
वरिष्ठ लिपिक – वित्त विभाग

सबको जो जोड़ कर रखती
हिंदी भाषा प्यारी है ।

अलग-अलग हैं धर्म यहाँ
है अलग-अलग कई भाषाएँ
आपस में बातें करने को
फिर भी सब हिंदी अपनाएं,
बहुत सभ्य यह भाषा है
लगती भी संस्कारी है
सबको जो जोड़ कर रखती
हिंदी भाषा प्यारी है ।

रचे गये साहित्य इसी में
रचे गए इतिहास
हिंदी से ही होता है
अपनेपन का आभास,
सारे राष्ट्र की भाषा है ये
संस्कृत की बेटी दुलारी है
सबको जो जोड़ कर रखती
हिंदी भाषा प्यारी है ।

सारे भारतवासी मिलकर
हिंदी का गुणगान करें
फर्ज हमारा यही है बनता
हिंदी का सम्मान करें,
हिंदी अपनाएं दिल से
इसी में समझदारी है
सबको जो जोड़ कर रखती
हिंदी भाषा प्यारी है ।

सरकारी कर्मचारी

सुश्री दीक्षा राजपुरोहित
सहायक यातायात प्रबंधक

यूं तो सरकारी दफ्तरों में
अक्सर सरकारी नौकर ही पाए जाते हैं

पर उन्हीं सरकारी दफ्तरों में होते हैं कुछ लोग
जो कुछ अच्छा करना चाहते हैं

टूटी-फूटी चरमराती व्यवस्था में भी
हँसी-खुशी अपनी जिम्मेदारियाँ निभाते हैं

कर्म ही पूजा है इस ख्याल को मन में रख कर
अपना हर कर्तव्य निभाते हैं

हर दिन कुछ नया सोचकर
कुछ बदलाव लाना चाहते हैं

देने को सहयोग हर पल
आतुर ही नजर आते हैं

अपनी हर जिम्मेदारी
पूरी दृढ़ता और निष्ठा से निभाते हैं

व्यवस्था के हर एक बदलाव में
अहम भूमिका निभाना चाहते हैं

सीमित संसाधनों का सही प्रयोग कर
अभूतपूर्व कार्य कर जाते हैं

अपनी ऊर्जावान सोच से
कई छोटे-छोटे पर महत्वपूर्ण बदलाव ले आते हैं

अपने सहज और सरल विचारों से
परिवर्तन की लहर उठाते हैं

आज कुछ नया करेंगे
हर दिन इसी मंशा के साथ दफ्तर चले आते हैं

परिवर्तन की लौ जला कर
निवृति तक जगमगाते हैं

मिल जाए जो वो एक बार तो
दिलों दिमाग पर अपनी छाप छोड़ जाते हैं

कुछ खास नहीं होता उनमें
वो भी आम लोगों की तरह ही नजर आते हैं

गुण उत्तमता की पहचान

श्रीमती संगीता खिलवानी
सहायक, सिविल अभियांत्रिकी विभाग

आज का मेरा यह लेख बच्चों को समर्पित है । मुझे लगा मेरे इस लेख से बच्चों में शायद कुछ बदलाव आए । हम सब जानते है आज की पीढ़ी को, इनसे पहुंचना बेहद कठिन है, परंतु हम प्यार से, उन्हें समझाकर और अच्छी-अच्छी बातें बताकर कुछ सीखा तो सकते हैं, बस यही सोचकर यह लेख आपके सामने रख रही हूँ मनुष्य कई गुणों से बना होता है, पढ़ाई-लिखाई में अच्छा होना उन्हीं गुणों में से एक है, पर इसके अलावा, अच्छा व्यवहार, बड़ों के प्रति सम्मान, छोटों के प्रति प्रेम, सकारात्मक दृष्टिकोण, ये भी मनुष्य के आवश्यक गुण हैं, और सिर्फ पढ़ाई-लिखाई में अच्छा होने से कहीं ज्यादा जरूरी है । मोहित एक मेघावी छात्र था । उसने हाई स्कूल और इंटरमीडिएट की परीक्षा में पूरे जिले में टॉप किया था। पर इस सफलता के बावजूद उसके माता-पिता उससे खुश नहीं थे । कारण था पढ़ाई को लेकर उसका घमंड और अपने बड़ों से तमीज से बात न करना । वह अक्सर ही लोगों से ऊंची आवाज़ में बात किया करता और अकारण ही उनका मजाक उड़ा देता । खैर दिन बीतते गए और देखते-देखते मोहित बड़ा भी हो गया ।

स्नातक होने के बाद मोहित नौकरी की खोज में निकला । प्रतियोगी परीक्षा पास करने के बावजूद उसका इंटरव्यू में चयन नहीं हो पाता था । मोहित को लगा था कि अच्छे अंक के दम पर उसे आसानी से नौकरी मिल जायेगी पर ऐसा हो न सका । काफी प्रयास के बाद भी वो सफल ना हो सका । हर बार उसका घमंड, बात करने का तरीका इंटरव्यू लेने वाले को अखर जाता और वो उसे ना लेते । निरंतर मिल रही असफलता से मोहित निराश हो चुका था, पर अभी भी उसे समझ नहीं आ रहा था कि उसे अपना व्यवहार बदलने की आवश्यकता है ।

एक दिन रस्ते में मोहित की मुलाकात अपने स्कूल के प्रिय अध्यापक से हो गयी । वह उन्हें बहुत मानता था और अध्यापक भी उससे बहुत स्नेह करते थे । मोहित ने अध्यापक को सारी बात बताई । चूँकि अध्यापक मोहित के व्यवहार से परिचित थे, तो उन्होंने कहा कि कल तुम मेरे घर आना तब मैं तुम्हें इसका उपाय बताऊंगा ।

मोहित अगले दिन मास्टर साहब के घर गया । मास्टर साहब घर पर चावल पका रहे थे । दोनों आपस में बात ही कर रहे थे कि मास्टर साहब ने मोहित से कहा जाके देख के आओ की चावल पके कि नहीं । मोहित अन्दर गया उसने अन्दर से ही कहा कि सर चावल पक गए हैं, मैं गैस बंद कर देता हूँ । मास्टर साहब ने भी ऐसा ही करने को कहा ।

अब मोहित और मास्टर साहब आमने-सामने बैठे थे । मास्टर साहब मोहित की तरफ मुस्कुराते हुए बोले - मोहित तुमने कैसे पता लगाया कि चावल पक गए हैं ?

मोहित बोला ये तो बहुत आसान था । मैंने चावल का एक दाना उठाया और उसे चेक किया कि वो पका है कि नहीं, वो पक चुका था तो मतलब चावल पक चुके हैं ।

मास्टर जी गंभीर होते हुए बोले यही तुम्हारे असफल होने का कारण है ।

मोहित उत्सुकता वश नवनीत मास्टर जी की ओर देखने लगा ।

मास्टर साहब समझाते हुए बोले की एक चावल के दाने ने पूरे चावल का हाल बयान कर दिया । सिर्फ एक चावल का दाना काफी है ये बताने को कि अन्य चावल पके या नहीं । हो सकता है कुछ चावल न पके हों पर तुम उन्हें नहीं खोज सकते वो तो सिर्फ खाते वक्त ही अपना स्वभाव बताएँगे ।

इसी प्रकार तुमने अपना एक गुण तो पका लिया पर बाकियों की तरफ ध्यान ही नहीं दिया। इसलिए जब कोई इंटरव्यूवर तुम्हारा इंटरव्यू लेता है तो तुम उसे कहीं से पके और कहीं से कच्चे लगते हो, और आपके चावलों की तरह ही कोई इस तरह के कैंडिडेट्स भी पसंद नहीं करता।

मोहित को अपनी गलती का एहसास हो चुका था। वो अब मास्टर जी के यहाँ से नयी एनर्जी ले के जा रहा था।

हमारे जीवन में भी कोई बुराई होती है, जो हो सकता है हमें खुद नज़र न आती हो पर सामने वाला बुराई तुरंत भाप लेता है। अत: हमें निरंतर यह प्रयास करना चाहिए कि हमारे गुणों से बना चावल का एक-एक दाना अच्छी तरह से पका हों, ताकि कोई हमें कहीं से चखे उसे हमारे अन्दर पका हुआ दाना ही मिले।

शक्ति पर्व

(गरबा-गर्वानुभूति)

सुश्री यशस्विनी यादव
पुस्तकालयाध्यक्ष

हे मातु अम्बिके विद्याधन,
यश, कीर्ति की आभासी हूँ।
आशीष सुरक्षा मिले सदा,
तेरे चरणों की दासी हूँ ।।

तुमसे जीवन को मिले शक्ति,
आशापुरा की मिले भक्ति।
मैं सत्य पथिक बन डिगूं नहीं,
अर्पित माँ तुझको भाव-भक्ति ।।

तेजोमय हो मेरा जीवन,
तेजोमय मेरा स्वाभिमान।
सत्कर्मों की शृंखला बने,
साक्षी हो धरती आसमान ।।

अभिलाषी है 'यशस्विनी' बस,
यश की, जय की, संरक्षण की।
कर दो पावन मेरा जीवन,
चाहत है माँ अभिरक्षण की ।।

जीवन की छाँव ''माता-पिता''

सुश्री विधि जे. जोषी
प्रशिक्षु
भंडार अनुभाग

सिर्फ भावनाओं में नहीं,
बल्कि हर सांस का कारण हैं, माता-पिता,
वों हर सुख की शुरुआत हैं,
और दुखों का अंत है, माता-पिता,
बस मेरी ख्वाहिशों को पूरा करने के लिए,
दिन-रात काम करते हैं, माता-पिता,
मुझे चाहिए तेरा खूबसूरत चेहरा देखने के लिए,
कई मुश्किलों को स्वीकार करते हैं, माता-पिता
उनकी चमक सूरज की तरह है,
लेकिन मेरे लिए वो चाँद की ठंडक हैं, माता-पिता
निराशा में उम्मीद की किरण,
अँधेरे में रोशनी का प्रतिबिंब हैं, माता-पिता
चुनौतियों की इस जिंदगी में,
हर जद्दोजहद का डटकर मुकाबला करते हैं, माता-पिता

एक बेहतर भविष्य मेरा बनाने के लिए,
वर्तमान की खूबसूरत पलों को छोड़ देते हैं, माता-पिता
प्यारे दोस्त, सफलता की राह ही,
जीवन की मंजिल हैं, माता-पिता
इस दिल में एहसास का फव्वारा है,
किसकी धड़कन है ये साँस, माता-पिता

हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2022-23 का वार्षिक कार्यक्रम

दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण ''ख'' क्षेत्र में आता है ।
अत: इस कार्यलय के लिए ''ख'' क्षेत्र के कॉलम में दिए गए लक्ष्य लागू होंगे ।

क्र.सं.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 65% 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/ व्यक्ति 100%	1 ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2 ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90% 3 ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4.ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 90%	1 ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 55% 2 ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 55% 3 ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 55%
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/ डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
10.	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद ।	100%	100%	100%
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	100%	100%	100%

पर्यावरण को बचाने की लो राह, बंद करो ये पॉलिथीन का उपयोग ।

13.	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	**25% (न्यूनतम)**	**25% (न्यूनतम)**	**25% (न्यूनतम)**
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	**25% (न्यूनतम)**	**25% (न्यूनतम)**	**25% (न्यूनतम)**
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण		वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण	
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें (क) हिंदी सलाहकार समिति (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 2 बैठकें वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक) वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)	
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया और साहित्य का हिंदी अनुवाद	**100%**	**100%**	**100%**
16.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हों।	**40%**	**30%**	**20%**
			(न्यूनतम अनुभाग)	

सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, "क" क्षेत्र में कुल कार्य का 40%, "ख" क्षेत्र में 25% और "ग" क्षेत्र में 15% कार्य हिंदी में किया जाए।

रात गवाई सोय के, दिवस गंवाया खाय।
हीरा जन्म अमोल था, कोडी बदले जाय।।

संदर्भाधीन अवधि के दौरान गतिविधियों की झलकियाँ

दि. 26 जनवरी 2022 को गणतंत्र दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय ध्वज को सलामी देते हुए श्री एस. के. मेहता अध्यक्ष, दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण

कोविड-19 से महामारी के कारण मृतक कर्मचारियों के परिवारजनों को रु. 50 लाख की वित्तीय सहायता प्रदान करते हुए अध्यक्ष, श्री एस. के. मेहता

5 जून, 2022 को पर्यावरण दिवस पर पौधरोपण करते हुए दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण के अधिकारीगण

21 जून,2022 को अंतर्राष्ट्रीय योगदिवस पर आयोजित सत्र के दौरान कर्मचारियों एवं अधिकारियों संग योग करते हुए अध्यक्ष श्री एस. के. मेहता

08 मार्च 2022 अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पधारी श्रीमती अमिता मेहता, धर्मपत्नी श्री एस. के. मेहता, अध्यक्ष, दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण के साथ समूह चित्र

'आज़ादी का अमृत महोत्सव' के 61 वें सप्ताह के दौरान 10 मई, 2022 को स्थानीय स्वतंत्रता सेनानियों के जीवन पर आयोजित प्रदर्शनी का निरीक्षण करते हुए अध्यक्ष श्री एस. के. मेहता एवं उपाध्यक्ष नंदीश शुक्ल ।

संदर्भाधीन अवधि के दौरान गतिविधियों की झलकियाँ

दि. 1 मई 2022 को गुजरात के माननीय मुख्यमंत्री भूपेन्द्र पटेल द्वारा 'गुजरात का गौरव-2022' समारोह के दौरान 'डायनेमिक ब्यूरोक्रेट' पुरस्कार ग्रहण करते हुए अध्यक्ष दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण एस.के. मेहता

नव मंगलूर में 40 वीं अखिल भारतीय महापत्तन टेनिस चैंपियनशिप में, दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण टेनिस टीम द्वारा टीम इवेंट में लगातार चौथे वर्ष स्वर्णपदक जीतने का गौरवांवित दृश्य

1 जून, 2022 को साइबर जागरुकता दिवस समारोह का उद्घाटन करते हुए उपाध्यक्ष श्री नंदीश शुक्ल ।

1 जून 2022 को डीपीए में साइबर जागरुकता दिवस के अवसर पर साइबर अपराध के खतरों से बचने की जानकारी वीडियो कॉन्फ्रेसिंग के माध्यम से देते हुए, श्री आई.एल.नरसिम्हा राव, प्रसिद्ध साइबर सुरक्षा विशेषज्ञ ।

''आज़ादी का अमृत महोत्सव'' के तहत डीपीए द्वारा मांडवी समुद्रतट पर 26 मार्च 2022 को आयोजित रेत शिल्प कला प्रदर्शनी का विहंगम दृश्य

28 मार्च 2022 को संरक्षा को और सुदृढ़ बनाने के लिए कंडला में तीसरे प्राथमिक उपचार केन्द्र का उद्घाटन करते हुए अध्यक्ष, श्री एस. के. मेहता

संदर्भाधीन अवधि के दौरान गतिविधियों की झलकियाँ

दि. 31 जनवरी 2022 को अध्यक्ष, दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण श्री एस. के. मेहता की अध्यक्षता में आयोजित नराकास की छमाही ऑनलाईन बैठक का दृश्य

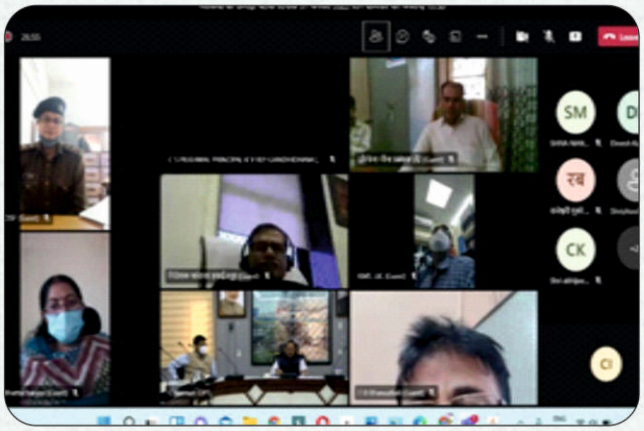

दि. 31 जनवरी 2022 को आयोजित नराकास की छमाही ऑनलाईन बैठक का एक अन्य दृश्य

दि. 03 मार्च 2022 को नराकास के तत्वावधान में हिन्दी संगोष्ठी का उद्घाटन, अध्यक्ष श्री एस. के. मेहता जी द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया ।

दि. 03 मार्च 2022 को नराकास के तत्वावधान से हिंदी संगोष्ठी में ''राजभाषा हिंदी और तकनीकी'' विषय पर सारगर्भित व्याख्यान देते हुए मुख्य वक्ता के रुप में डॉ. एम.एल. गुप्ता, उप निदेशक सेवानिवृत , हिंदी प्रशिक्षण योजना, राजभाषा विभाग, मुंबई ।

दि. 4 मार्च 2022 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला का समूहचित्र

दि. 4 मार्च 2022 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला में राजभाषा कार्यान्वयन पर प्रशिक्षण देते हुए डॉ. एम. एल. गुप्ता, उपनिदेशक (सेवानिवृत), हिन्दी शिक्षण योजना, मुंबई

संदर्भाधीन अवधि के दौरान गतिविधियों की झलकियाँ

दि. 10 जून 2022 को नराकास के तत्वावधान में केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल द्वारा सदस्य कार्यालयों के लिए आयोजित संयुक्त हिन्दी कार्यशाला का दृश्य

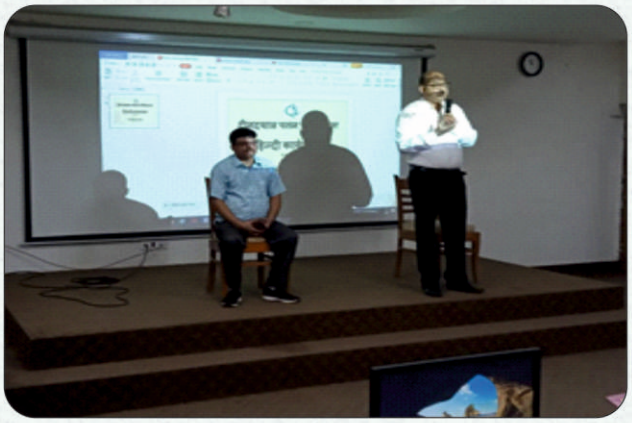

दि. 29 जून 2022 को हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए डीपीए के वरिष्ठ उप सचिव श्री वाई.के.सिंह

दि. 29 जून 2022 को आयोजित हिंदी कार्यशाला में प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार वितरित करते हुए श्री सी. हरिचंद्रन. सचिव, दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण

दि. 29 जून 2022 को आयोजित हिंदी कार्यशाला का एक विहंगम दृश्य

दि. 30 जून 2022 को श्री नंदीश शुक्ल उपाध्यक्ष, दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण की अध्यक्षता में आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक का दृश्य

दि. 30 जून 2022 को आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक के दौरान पोर्ट की छमाही हिन्दी गृहपत्रिका 'लहरों का राजहंस' के 22वें ई-अंक का विमोचन करते हुए श्री नंदीश शुक्ल, उपाध्यक्ष, दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण

महिला सशक्तिकरण

सुश्री विधि जे. जोषी
प्रशिक्षु
भंडार अनुभाग

प्राचीनकाल से महिलाओं पर अन्याय और अत्याचार होते आ रहे हैं। बहुत-सी महिलाएं तब से लेकर आज तक सिर्फ सहती आ रही है। क्योंकि पुराने जमाने में सभी क्षेत्रों में सिर्फ पुरुषों का ही वर्चस्व था। महिलाओं का किसी भी क्षेत्र में वर्चस्व नहीं था। छोटे से बड़े क्षेत्र में सिर्फ पुरुष ही कार्य कर रहे थे। महिलाओं को किसी भी प्रकार की शिक्षा नहीं दी जाती थी, क्योंकि उसको सिर्फ घर का काम ही करवाते थे। प्राचीन काल में बेटियाँ, महिलाएं घर से बाहर ही नहीं निकलती थी और धीरे-धीरे परिवर्तन होने लगा, भारत सरकार द्वारा ''बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ'' जैसे कई अभियान शुरू हुए। ऐसे अभियानों से लोगों में परिवर्तन आने लगा और महिला शिक्षित होने लगी। पहले किसी भी क्षेत्र में काम करने वाली महिलाओं को पुरुषों के मुकाबले कम वेतन दिया जाता था।

देश के सभी छोटे-बड़े क्षेत्रों में महिला सशक्तिकरण की जागरुकता फैलाना बहुत जरुरी है। जिसके लिए सभी महिलाओं को समाज से डरकर नहीं बल्कि झांसी की रानी की तरह एक योद्धा बनकर आगे आना होगा। सरकार द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रम जैसे कि मातृदिवस, आंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मे भाग लेकर जागृकता फैलाना चाहिए जो हर घर तक पहुंच सके।

वर्तमानकाल में महिला सशक्तिकरण में क्रांति होने लगी है। सभी महिलाओं के लिए सशक्तिकरण बहुत जरूरी है। जिसमें वो खुद अपना निर्णय ले सके। जिसके लिए उसको किसी पुरुष पर निर्भर रहने की जरूरत नहीं है। हर क्षेत्र में महिला दिन-प्रतिदिन पुरुषों से आगे बढ़ती जा रही है। जैसे कि खेल क्षेत्र, मीराबाई चानू, मितालीराज, पी. वी. सिंधू, मैरी कॉम इन सभी महिलाओं ने देश का नाम रोशन किया। राजकीय क्षेत्र में आनंदीबेन पटेल, प्रतिभा पाटिल और हमारे 35 वें राष्ट्रपति आदिवासी समाज की महिला श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ये सभी महिलाओं ने भी हमारा देश का नाम आगे बढ़ाया। ऐसे ही सभी महिलाओं को शिक्षित होकर देश को आगे बढ़ाना चाहिए।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता :।
यत्रै तास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला: क्रिया:।

ऐ ज़िंदगी....

श्री दिनेश आई. भूत
सहायक
समुद्री विभाग

पल दो पल का साथ हमारा, है पल दो पल की यारी,
फिर भी क्यूं लगती ऐ ज़िंदगी, तु मुझे इतनी प्यारी,

रिश्तो में तेरे साथ है जीना, चाहे कितना भी पड़े भारी,
फिर भी तेरे लिए ऐ ज़िंदगी, रखता हूँ जीने की तैयारी

गले लगाले या छोड़ अकेला, किस्मत तो है मेरी न्यारी,
सोच ले सोच ले ऐ ज़िंदगी, किस्मत पे मैं पड़ता भारी,

सुबह से शाम तक हमें, तु क्युं हैं दौड़ाती - थकाती,
अब मेरे साथ चल ऐ ज़िंदगी, है दौड़ने की तेरी बारी,

पल दो पल का साथ हमारा, है पल दो पल की यारी,
फिर भी क्यूं लगती ऐ ज़िंदगी, तु मुझे इतनी प्यारी,

ईमानदारी का फल

कु. प्रतीक भावनानी
सुपुत्र श्रीमती ज्योति एन. भावनानी,
सहायक, सा. प्र. विभाग

अहमदाबाद शहर के चाँदखेड़ा क्षेत्र में मिस्टर तथा मिसेज पारिख अपने दो बच्चों सहित रहा करते थे। चूँकि दोनों पति-पत्नी नौकरी करते थे इसलिए उन्होंने घर की साफ-सफाई, खाना बनाने एवं बच्चों की देखभाल के लिए लाजो को अपने घर पर रखा था जो बरसों से उनके यहाँ काम किया करती थी। लाजो बहुत ही मेहनती और ईमानदार थी, जिस वजह से मिस्टर एवं मिसेज पारिख दोनों ही आँख बंद करके लाजो पर विश्वास किया करते थे। वे लोग जब भी थोड़े दिनों के लिए बाहर कहीं घूमने जाते थें तो लाजो को घर की एक चाबी देकर घर की देखभाल करने के लिए छोड़ जाया करते थे।

एक बार बच्चों की छुट्टियाँ होने पर दोनों पति-पत्नी अपने बच्चों सहित पन्द्रह दिनों के लिए कहीं घूमने चले गए। हमेशा की भाँति इस बार भी लाजो को घर की चाबी देकर घर की देखभाल करने के लिए कह कर गए। लाजो भी उस घर को अपना घर समझ कर देखभाल करने लगी।

एक दिन लाजो की चचेरी बहन का बेटा दिलीप वहाँ से गुज़र रहा था तो अपनी मौसी को देखकर उससे मिलने चला आया। लाजो उसको घर के अंदर ले गई। बातों ही बातों में उसकी चचेरी बहन के बेटे दिलीप ने अपनी मौसी से मिस्टर एवं मिसेज पारिख के बारे में काफी जानकारी हासिल कर ली। घर के अंदर पड़े कीमती सामानों को देखकर दिलीप की नीयत बिगड़ने लगी और वह एक अच्छा मौका आने का इंतजार करने लगा और वह मौका उसे जल्द ही मिल गया। हुआ यूँ कि एक बार जब लाजो से मिलने आया तो लाजो ने उसे यह कह कर वहाँ रोक दिया कि उसे दो घंटे के लिए बाहर जाना है। उसे बैंक में से पैसे निकालकर थोड़ा जरुरी सामान खरीदने जाना है तब तक वह वहाँ बैठकर घर की देखभाल करे। दिलीप की तो जैसे भगवान ने सुन ली। वह खुशी-खुशी राजी हो गया।

लाजो तैयार होकर बैंक के लिए निकल पड़ी लाजो जैसे ही बैंक के दरवाजे पर पहुँची तो वहाँ बड़ा ताला लटक रहा था। उसने चौकीदार से जब पूछा तो पता चला कि बैंक की तो आज छुट्टी है। यह सुनकर लाजो घर की ओर चल दी क्यूंकि जब पैसे ही नहीं निकले तो खरीदारी कहाँ से होगी। घर के अंदर कदम रखते ही उसके होश उड़ गए। उसने देखा कि दिलीप कीमती सामान इकट्ठा करने में लगा हुआ था। लाजो समय से पहले ही घर पहुँच गई थी जिस वजह से दिलीप का प्लान फेल हो गया। भगवान ने भी लाजो की ईमानदारी की मानो आज लाज रख ली थी। लाजो ने दिलीप को रंगे हाथों पकड़ लिया और पड़ोसियों की मदद से उसे पुलिस के हवाले कर दिया। मिस्टर और मिसेज पारिख को भी जब अपने पड़ोसियों से इस बात का पता चला तो वे फौरन घर वापस लौट आए। उन्होंने लाजो का तहे दिल से शुक्रिया अदा किया और उसके वेतन में भी वृद्धि कर दी।

शिक्षा :- भूलकर भी किसी अपने पर भी आँख बंद करके उस पर विश्वास करके, उसको अपने जैसा ईमानदार समझकर कोई राज की बात या घर की बात नहीं बतानी चाहिए क्योंकि नियत का भरोसा नहीं होता कब किसी की नियत बदल जाए।

जो ईमानदारी से चलते है भगवान भी उसका हरदम साथ देते हैं और उन्हें मुसीबतों से बचाते हैं।

जग्गू की गृहस्थी

श्रीमती सोनिया जे. हेमनानी
प्रधान लिपिक
भंडार अनुभाग

एक गाँव में एक जमींदार था । उसके कई नौकरों में से एक जग्गू नाम का नौकर भी था । गाँव से लगी बस्ती में, बाकी मजदूरों के साथ जग्गू भी अपने पाँच लड़कों के साथ रहता था ।

जग्गू की पत्नी बहुत पहले ही गुजर गई थी । एक झोपड़ी में वो अपने पाँच बच्चों को पाल रहा था । बच्चे बड़े होते गए और जमींदार के पास नौकरी करने लगे । सभी मजदूरों को शाम को मजदूरी मिलती साथ में थोड़ा-सा खाने के लिए राशन भी मिलता था । जग्गू और उसके लड़के चना और गुड़ लेते थे । चना भूनकर गुड़ के साथ रख लेते थे । बस्ती वाले ने जग्गू के बड़े लड़के को शादी कर लेने की सलाह दी । उसकी शादी हो गई और कुछ दिनों बाद गौना भी आ गया । उस दिन जग्गू की झोपडी के सामने बडी धूमधाम मची, बहुत लोग इकट्ठा हुए बहूँ को आशीर्वाद देने के लिए । दूसरे दिन आदमी काम पर चले गए और औरते अपने घर जाते-जाते बहूँ से कहती गई पास ही घर है, कुछ भी चीज चाहिए, जरूरत हो तो संकोच मत करना, आ जाना लेने । सबके जाने के बाद बहूँ ने घूंघट उठाकर अपने ससुराल को देखा तो उसका कलेजा मुँह को आ गया ।

जर्जर-सी झोपड़ी, खूंटी पर रखी कुछ पतेलिया, और झोपड़ी के बाहर बने छ: चूल्हे । (जग्गू और उसके बच्चे अलग-अलग चने भूनते थे ।) बहू का मन हुआ कि उठे और सरपट अपने गाँव भाग चले । पर अचानक उसे सोचकर धक्का लगा - वहाँ कौन से नूर गड़े है । माँ है नहीं । भाई-भाभी के राज में नौकरानी जैसी जिंदगी ही तो गुजारनी होगी । यह सोचकर वह रोने लगी । रोते-रोते थककर शांत हुई । मन में कुछ सोचा । पड़ोसन के घर जाकर पूछा - अम्मा एक झाड़ू मिलेगा क्या ? बुढ़िया अम्मा एक झाड़ू , गोबर और मिट्टी दी, साथ में अपनी पोती को भी मदद करने को भेज दिया ।

जग्गू और उसके लडके, जब घर लौटे तो एक ही चुल्हा देख भडक उठे । चिल्लाने लगे कि इसने आते ही सत्यानाश कर दिया । अपने आदमी का छोड़ बाकी सबका चूल्हा फोड़ दिया । झगड़े की आवाज सुनकर बहूँ झोपड़ी से निकली और बोली आप लोग हाथ-मुँह धोकर बैठिये, मैं खाना निकालती हूँ । सब चंभित हो गये । हाथ-मुँह धोकर बैठे बहू ने खाना परोसा । रोटी, शाक, चटनी । मुद्दत बाद उन्हें ऐसा खाना मिला था । खाकर सोने चले गए ।

सुबह काम पर आते समय बहूँ ने उन्हें एक-एक रोटी और गुड़ दिया । चलते समय जग्गू से उसने पूछा - बाबूजी मालिक आपको चना और गुड़ ही देता है क्या ? जग्गू ने बताया कि मिलता तो सभी अन्न है, पर हम चना गुड़ लेते हैं खाने में आसान रहता है । बहूँ ने समझाया कि सब अलग-अलग प्रकार का अनाज लिया करें । देवर ने बताया कि उसका काम लकड़ी चीरना है । बहूँ ने उसे घर के ईधन के लिए भी कुछ लकड़ी लाने को कहा । बहूँ सबकी मजूरी के अनाज से एक-एक मुट्ठी अन्न अलग करके बनिये के दुकान से बाकी जरूरत की वस्तुएँ ले आती । जग्गू की गृहस्थी अच्छे से चल पड़ी ।

बहूँ की चर्चा गाँव में होने लगी जग्गू की बहूँ बहूत ही गुणवान है । जमींदार तक यह बात पहुँची और एक दिन वो उसकी बहूँ को आशीर्वाद देने जग्गू के घर पहुँचा । बहूँ ने पैर छूकर प्रणाम किया जमींदार ने आशीर्वाद देते हुए एक हार दिया । बहूँ ने माथे से लगाकर हार वापस किया कहा मालिक यह हार हमारे किस काम आएगा । इससे अच्छा है कि झोपड़ी के दायें, बायें थोड़ी-सी जमीन दे दीजिए तो कोठरी बन जाएगी । बहूँ की चतुराई पर जमींदार हँस पड़ा । बोला ठीक है, जमीन तो जग्गू को मिलेगी ही । यह हार तो तुम्हारा हुआ और बहूँ ने एक कोठरी भी बनवा ली । राजी खुशी से जग्गू की गृहस्थी सवर गई ।

अर्थात औरत चाहे तो स्वर्ग बना देती है घर को, देश को समाज को ।

हर कदम हर डगर पॉलिथीन ही पॉलिथीन, पॉलिथीन हटाओ पर्यावरण बचाओ ।

राष्ट्र निर्माण में विद्यार्थियों का योगदान

श्री हेमल सोनी
यातायात बाह्य लिपिक

विद्यार्थी का अर्थ है – विद्या और अर्थी अर्थात् विद्या का इच्छुक या विद्या को प्राप्त करने वाला । विद्या ग्रहण करना विद्यार्थी का धर्म और कर्तव्य है । मात्र विद्या ग्रहण करना ही विद्यार्थी का धर्म और कर्तव्य नहीं है, अपितु इस विद्या को समाज और राष्ट्र के लिए उपयोग करना भी विद्यार्थी का धर्म और कर्तव्य है । विद्यार्थी का जीवन एक पुनीत संस्कार और सभ्यता का जीवन होता है । वह इस अवधि में अपने अंदर दिव्य संस्कारों की ज्योति जलाता है । ये संस्कार ही धर्म, समाज और राष्ट्र के प्रति कर्तव्यबद्ध होने की उसे प्रेरणा दिया करते है । इनसे प्रेरित होकर ही विद्यार्थी अपने प्राणों का समर्पण और उत्सर्ग किया करता है । इस प्रकार से दिव्य संस्कार का विकास प्राप्त करके विद्यार्थी समाज और राष्ट्र के प्रति अपना कोई न कोई योगदान करता ही रहता है ।

राष्ट्र के प्रति विद्यार्थी का योगदान बहुत बड़ा और विस्तृत भी है । वे अपने योगदान के द्वारा राष्ट्र को उन्नत और समृद्ध बना सकते है । राष्ट्र के प्रति विद्यार्थी तभी योगदान कर सकता है, जब वह अपनी निष्ठा और सत्याचरण को श्रेष्ठ और महान बनाकर इस कार्य क्षेत्र में उतरता है । राष्ट्र के प्रति विद्यार्थियों का कर्म क्षेत्र बहुत ही अद्‌भुत और अनुपम है, क्योंकि वह शिक्षा ग्रहण करते हुए भी समाज और राष्ट्र के हित के प्रति अपना अधिक से अधिक योगदान दे सकता है । यह सोचते हुए यह विचित्र आभास होता है कि शिक्षा और राजनीति दोनों पहलुओं को लेकर विद्यार्थी कैसे आगे बढ़ सकता है। क्योंकि विद्या और राजनीति का सम्बन्ध परस्पर भिन्न और विपरीत है । विद्यार्थी का अपने समाज और राष्ट्र के प्रति योगदान देना और इसका निर्वाह करना अत्यंत विकट और दुष्कर कार्य है । फिर एक समाज चिंतक और राष्ट्रभक्त विद्यार्थी विद्याध्ययन करते हुए भी अपना कोई न कोई योगदान अवश्य दे सकता है । अगर ऐसा कोई विद्यार्थी करने में अपनी योग्यता का परिचय देता है, तो निश्चय ही वह महान राष्ट्र–धर्मी, राष्ट्र का नियामक और राष्ट्र नायक हो सकता है।

विद्यार्थियों को अपने राष्ट्र और समाज के प्रति बहुत ही दिव्य और अनोखा योगदान होता है । इसलिए विद्यार्थियों को अपने राष्ट्र के प्रति योगदान देने के लिए अपनी शिक्षा का पूर्णरूप से निर्वाह करना चाहिए । इसके लिए उन्हें अपने उद्देश्य के प्रति जागरुक होना चाहिए ।

शिक्षा के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट उपलब्धियों को अर्जित करके ही विद्यार्थी राष्ट्र और समाज के प्रति कर्तव्यनिष्ठ हो सकता है । विद्यार्थी को एक आदर्श और कर्तव्यनिष्ठता का पाठ अच्छी तरह से याद करके ही राष्ट्र और समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्वों को निभाना चाहिए, अन्यथा वह न इधर का रहेगा और न उधर का ही रहेगा । एक चेतनाशील विद्यार्थी ही राष्ट्र और समाज के प्रति उत्तरदायी हो सकता है, जबकि लापरवाह विद्यार्थी राष्ट्र के प्रति गद्दार और राष्ट्रदोही होता है । राष्ट्र और समाज को एकरूप देने के लिए आदर्श विद्यार्थी महान राष्ट्र नायकों और राष्ट्र की महान विभूतियों की जीवनी को सिद्धान्ततः अपनाते हुए ही राष्ट्र निर्माण की दिशा में अग्रसर हो सकता है । अतएव राष्ट्र निर्माण के प्रति विद्यार्थी का योगदान सर्वथा महान और उच्च होता है ।

राष्ट्र के प्रति योगदान देनेवाले विद्यार्थी को केवल नेतागिरी या लच्छेदार वाक्यों का वाचन नहीं करना चाहिए, अपितु उसे सब प्रकार के कार्यों का अनुभव ढंग से होना चाहिए । अपने राष्ट्र के धर्म और संस्कृति का रक्षक और हितैषी विद्यार्थी इसकी शान–आन पर मर मिटने के लिए हाथ में प्राणों को लेकर ही राष्ट्र के प्रति योगदान देने में सबल और समर्थ हो सकता है ।

''हिंदी भाषा एक ऐसी सार्वजनिक भाषा है, जिसे बिना भेद–भाव प्रत्येक भारतीय ग्रहण कर सकता है ।'' –मदन मोहन मालवीय

लिखते हैं

सुश्री शाहु सुनैना कुमारी
प्रशिक्षु
सामान्य प्रशासन विभाग

जो ना कह पाए किसी से चल वो बात लिखते हैं ।
कही दबी है जो चल आज वो आवाज लिखते हैं ।
जिए जो कल खूबसूरत वो पल
चल उन्हें आज लिखते हैं ।
हो जाए जो हक़ीक़त
ऐसे ख्वाब लिखते हैं ।

चल मोहब्बत भी बेहिसाब लिखते हैं ।
कागज ला कलम ला दवात ला हँसने के लिए
कुछ मजाक लिखते हैं ।
छुपी है जो हंसी के पीछे
उस गम उस आदमी की भी कुछ
बात लिखते हैं ।
खुश कर दे जो किसी को
चल कुछ वो अल्फाज़ लिखते हैं ।

किसी ने ना पढ़ी हो तेरी पढ़ी है मैंने जो
चल आज वो जज्बात लिखते हैं ।
किसी के साथ बिताए हसीन पलों को
राज ही रखते हैं
लेकिन दिल में जो दफन है
चल वो याद लिखते हैं।

प्यारी कविता

श्रीमती लता जे. दवे
वरिष्ठ लिपिक
अभियांत्रिकी विभाग

आहिस्ता चल जिंदगी अभी कई कर्ज चुकाना बाकी है,
कुछ दर्द मिटाना बाकी है कुछ फर्ज निभाना बाकी है ।
रफ्तार में तेरे चलने से कुछ रूठ गए कुछ छुट गए,
रूठे को मनाना बाकी है रोतो को हँसाना बाकी है ।
कुछ रिश्ते बनकर टूट गए कुछ जुड़ते-जुड़ते छूट गए,
उन टूटे-छूटे रिश्तो के जख्मों को मिटाना बाकी है ।
कुछ हसरतें अभी अधूरी हैं कुछ काम भी और जरूरी है,
जीवन की उलझी पहेली को पूरा सुलझाना बाकी है ।
जब सांसों को थम जाना है फिर क्या खोना क्या पाना है,
पर मन के जिद्दी बच्चे को यह बात बताना बाकी है ।
आहिस्ता चल जिंदगी अभी कई कर्ज चुकाना बाकी है,
कुछ दर्द मिटाना बाकी है कुछ फर्ज निभाना बाकी है ।

मैं यहाँ तक आया हूँ

सुश्री दीक्षा राजपुरोहित
सहायक यातायात प्रबंधक

विचारों के भूलभुलैया से
एक ख़्वाब का पीछा करते-करते
मैं यहाँ तक आया हूँ
फूलों के बागानों से नहीं
कांटो की राह पे चलकर मैं यहाँ तक आया हूँ
हरे भरे मैदानों से नहीं तपती बंजर ज़मी पर नंगे पाँव चलकर
मैं यहाँ तक आया हूँ
कई चुनौतियाँ आई इस राह में
हर चुनौती के लिए एक संग्राम लड़कर
मैं यहाँ तक आया हूँ
एक दशक निकल गया इस सफर में
इस एक दशक में मीलों का रास्ता तय कर
मैं यहाँ तक आया हूँ
संघर्ष का दूसरा नाम ही जीवन हैं
इस सच को हर दिन हर रात जी कर
मैं यहाँ तक आया हूँ
कई आंधियों और तूफानों का डटकर सामना करके
मैं यहाँ तक आया हूँ
घने अंधेरों को अपने प्रयासों की लौ से उजागर करके
मैं यहाँ तक आया हूँ
संघर्षों के दरिया में हौसले की नाव चला कर
मैं यहाँ तक आया हूँ
कुछ अपनो का साथ और थोड़े आत्मविश्वास के सहारे
मैं यहाँ तक आया हूँ
मुफ्त में कुछ नहीं मिला मुझे
हर उपलब्धि के लिए कई बलिदान देकर
मैं यहाँ तक आया हूँ

कबीरा ते नर अँध है, गुरु को कहते और ।
हरि रूठे गुरु ठौर है, गुरु रूठे नहीं ठौर ।।

''हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है ।'' -सुमित्रानंदन पंत

अदरक के खास गुण

श्रीमती कल्पना वी. महेश्वरी
श्रम निरीक्षक – यातायात विभाग

अदरक के ज्यूस में सूजन को कम करने की शक्ति अत्याधिक मात्रा में होती है और यह उन लोगों के लिए वरदान की तरह है जो जोड़ों के दर्द और सूजन से परेशान है। एक अध्ययन के मुताबिक जो लोग अदरक के ज्यूस का उपयोग नियमित तौर पर करते हैं उन्हें जोड़ों में सूजन और दर्द पैदा करने वाली बिमारियाँ परेशान नहीं करती। आपके जोड़ों की समस्या नई हो या कई साल पुरानी – यकीन रखिएं कि अदरक का ज्युस बहुत लाभकारी है। अदरक के ज्यूस में एंटी ओक्सीडेंट्स होते हैं, जो शरीर में ताजे रक्त के प्रवाह को बढ़ाते है क्योंकि इसमें खून को साफ करने का खास गुण होता है।

अदरक में कैंसर जैसी भयानक बीमारी से शरीर को बचाएं रखने का गुण होता है। यह कैंसर पैदा करने वाले सेल्स को खत्म करता है। एक शोध के हिसाब से अदरक स्तन कैंसर पैदा करने वाले सेल को बढ़ने से रोकता है।

अदरक में खून को पतला करने का नायाब गुण होता है और इसी वजह से यह ब्लड प्रेशर जैसी बीमारी में तुरंत लाभ के लिए जाना जाता है। सभी प्रकार के दर्द से राहत देने की इसकी क्षमता इसे बहुत ही खास बनाती है। चाहे आपके दांत हो या सिर में अदरक का ज्यूस बहुत असरकारक है। शोधों के हिसाब से यह माईग्रेन जैसी बीमारी में भी काफी लाभप्रद है।

अगर आपको पाचन संबंधी कोई भी समस्या है, तो समझ लीजिए कि आपकी यह समस्या अब आपको और परेशान नहीं कर पाएंगी अदरक का ज्यूस आपके पेट में पड़े हुए खाने को निकास द्वार की तरफ थकेलता है। अदरक का यह चमत्कारी गुण आपको न केवल पाचन और गैस बल्कि सभी तरह के पेट दर्द से भी निजात दिलाता है।

अदरक के ज्यूस के नियमित सेवन से आप कोलेस्ट्रॉल को हमेशा कम रख सकते हैं। यह रक्त के थक्कों को जमने नहीं देता और खून के प्रवाह को बढ़ाता है, और इस प्रकार हृदयाघात की आशंका से आपको बचाएं रखता है।

अदरक के ज्यूस में गठिया रोग को भी ठीक करने की क्षमता होती है। सूजन को खत्म करनवाले गुण गठिया और थाईरोइड से ग्रस्त मरीजों के लिए बहुत फायदेमंद है। अदरक को सर्दी से बचाने में सबसे अधिक कारगर माना जाता है। यह सर्दी पैदा करनेवाले बैक्टीरीया को खत्म करने के साथ–साथ सर्दी फिर से आपको परेशान न कर पाए, यह भी पक्का करती है।

अगर आप घने और चमकदार बाल चाहते हैं तो अदरक ज्यूस के नियमित उपयोग से आपकी यह इच्छा पूरी हो सकती है। इसे आप पी भी सकते है और सीधे सिर की त्वचा पर भी लगा सकते हैं, आपको सिर्फ यह ध्यान रखना हैं कि आप शुद्ध ज्यूस सिर पर लगाए जिसमें पानी की मात्रा बिल्कुल न हो या न के बराबर हो। यह न केवल आपके बाल स्वस्थ बना देगा बल्कि यह आपको रुसी से भी छुटकारा दिला देगा।

अगर आपको त्वचा से जुड़ी हुई कोई भी समस्या है तो आप अदरक के ज्यूस को नियमित तौर पर इस्तेमाल करना शुरु कर दीजिए। अदरक के ज्यूस से आप मुंहासों से हमेशा के लिए निजात पा सकते हैं।

फुटबॉल खेल

श्री यश जगदीश दवे
सुपुत्र – श्रीमती लता जे. दवे
वरिष्ठ लिपिक, अभियांत्रिकी विभाग

फुटबॉल एक विश्वप्रसिद्ध खेल है, इसे कई देशों में बहुत ही जोशों–खरोश के साथ खेला जाता है, ब्राजिल, स्पेन, फ्रांस, अर्जेंटीना आदि कई बड़े देशों के लोगों में इस खेल के प्रति एक अलग जुनून देखने को मिलता है ये एक टीम स्पोर्ट है जिसमें दो टीम बहुत ही जोश के साथ एक दुसरे के विरुद्ध खेलते हैं, इसमें गोल कीपर, बैकी आदि रूप में एक दल के खिलाड़ी अपना फ़र्ज निभाते है, इस खेल का मुख्य उद्देश्य होता है अपने विरोधी दल के खेमे में गोल दागना ।

'फुटबॉल' शब्द की उत्पत्ति कहाँ से हुई है, इसके पीछे कई लोगों की अलग–अलग राय है, ये माना जाता है कि चूँकि इस खेल के दौरान गेंद को पैर से मारना होता है, इस वजह से इसका नाम फुटबॉल पड़ गया हालाँकि इस नाम की उत्पत्ति का वास्तविक स्त्रोत का पता नहीं चल पाया है, फीफा के अनुसार फुटबॉल एक चीनी खेल सूजु का ही विकसित रूप है । यह खेल चीन में ह्याँ वंश के दौरान विकसित हुआ था । इसी खेल को जापान में असुका वंश के शासन काल में केमरी के नाम से खेला जा रहा था । इस खेल का विकास एक लम्बे अरसे तक हुआ है । कालांतर में 1586 ई. में ये जॉन डेविस नाम के एक समुद्री जहाज के कप्तान के कार्यकर्ताओं द्वारा ग्रीन लैंड में खेला गया । फुटबॉल के विकास के सफरनामे को रोबर्ट ब्रौज स्मिथ ने सन 1878 में एक किताब के रूप में पेश किया ।

दौरे हाज़िर में फुटबॉल बहुत ही बड़े पैमाने पर खेला जा रहा है, इसके कई मुकाबले राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर होने लगे है, इसके अतिरिक्त कई फूटबाल क्लबों की स्थापना राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हो चुकी है । इस खेल का सबसे बड़ा मुकाबला फुटबॉल विश्वकप का होता है । लियोलें मेस्सी, रोनाल्डिन्हो, रोनाल्डो, नेमार, आदि कई नाम इस तरह दुनिया भर में मशहूर हुए कि आज का युवा वर्ग इस खेल के प्रति बहुत अधिक सजग दिखता है ।

इस खेल में किसी भी दल का उद्देश्य नब्बे मिनट के खेल के दौरान अधिक से अधिक गोल करने का होता है । प्रत्येक दल में ग्यारह खिलाड़ी होते हैं, 90 मिनट के खेल के दौरान 45 मिनट पर एक ब्रेक होता है, जिसे हाफ टाइम कहते हैं। ये हाफ टाइम 15 मिनट का होता है । इसके बाद का 45 मिनट का समय लगातार चलता रहता है । इस दौरान यदि कोई खिलाड़ी घायल हो जाता है, तो 'इंजरी टाइम' के तहत कुछ देर के लिए खेल स्थगित हो जाता है, इसके बाद पुन: खेल शुरू होता है ।

अधूरा ख्वाब

कु. चिराग निहलानी
सुपुत्र श्रीमती आरती निहलानी
कनिष्ठ अभियंता (सिविल)

जितना खुद में रहना चाहूँ उतना चल आता है मिल
तुम न मिले हो हद से ज्यादा घबराता है ये दिल
क्यों हुआ ये कब हुआ ये जानकर मैं क्या करूं
सुबह शाम और रातभर बस तुझसे यूहीं बातें करूं
थोड़ा-सा पगला, पर नादान है ये दिल,
थोड़ा-सा आवारा, पर बेचारा है ये दिल...2
दूर रहने में प्यार की डोर थोड़ी खींच-सी गई
तुम्हारी यादों में वक्त जैसे थम-सा गया
बारिश की वो बूंदे चहेरे पर रुक-सी गयी
और मेरे हाथ में तेरा हाथ था वो पल चला सा गया
कितनी भी कोशिश कर लूं मैं अब प्यार करने की
सूनेपन में भी मद्धम-सी बोली तुम्हारी ही हो
साँसे मेरी अधूरी रहें, पर वो अधूरापन तुम्हारा ही हो
थोड़ा-सा पगला, पर नादान है ये दिल,
थोड़ा-सा आवारा, पर बेचारा है ये दिल...2
जब तुम मुस्कुरा दिया करते थे मेरी परेशानियों को जैसे किनारा मिल जाता
जब तुम गले लगते थे मानो मेहरबानियों को सहारा मिल जाता
मेरे मुश्किल वक्त में साथ रहकर अपनी मुश्किले भूल जाना
अपने पल और लम्हों में बीती जिंदगी को मुझे बताना
बिन कहे, मेरी जिंदगी से यूहीं चले जाना
और मुड़कर भी एक जलक ना दिखलाना
सब जायज था,
और अगर सब जायज था तो एक नयी शुरुआत करने की कोशिश में
फिर क्यों हो तुम नजरों के पहरों में, फिर क्यों हो तुम यादों के घेरों में
शायद वो रिश्ता रेशम-सा था रंज-सा नहीं
तुम मुझसे दूर जाकर भी, गयी नहीं कहीं
आज भी हर किसी के लिए नहीं धड़कता मेरा दिल
और नहीं अब ढूंढता कोई प्यार की मंजिल
थोड़ा-सा पगला, पर नादान है ये दिल,
थोड़ा-सा आवारा, पर बेचारा है ये दिल...2

आओ गणपति गणराज

श्रीमती रानी कुकसाल
वरिष्ठ लिपिक, वित्त विभाग

इंतजार में खड़े हैं सब आज कि आओ गणपति गणराज
केला और कोई मेवा परसो लड्डू संग में सेवा परसो
केला और कई मेवा परसो लड्डू संग में सेवा परसो
परसो रे ज्यौनार गजानन को परसो रे
इंतजार में खड़े हैं सब आज कि आओ गणपति गणराज
इंतजार में खड़े है सब आज

दुर्गा गौरी कान्हा आओ एकदन्त की महिमा गाओ
दुर्गा गौरी कान्हा आओ एकदन्त की महिमा गाओ
अरज कर रहे आज रहो यहाँ बरसों रे
इंतजार में खड़े हैं सब आज कि आओ गणपति गणराज
इंतजार में खड़े हैं सब आज

''सारी सृष्टि के मालिक''

श्रीमती पिन्की वी. प्रसाद
वरिष्ठ लिपिक, वित्त विभाग

सारी सृष्टि के मालिक तुम्हीं हो
सारी सृष्टि के रक्षक तुम्हीं हो
करते हैं, तुझको सादर प्रणाम
गाते हैं तेरे ही गुणगान

हम हैं तेरे हाथों की रचना
हम पर रहें तेरी करूणा
तन, मन, धन हमारा तेरा है
इन्हें शैतान को छूने न देना

सारी सृष्टि को तेरा सहारा
सारे संकट से हमको बचाना
तेरे हाथों में जीवन हमारा है
अपनी राहों पर हमको चलाना

अब दूर नहीं है किनारा
धीरज को हमारे बढ़ाना
जीवन की हमारी इस नैया को
भवसागर में खोने न देना

इतने नरम मत बनो

सुश्री गीता त्रिपाठी
डी.ई.वी.ओ., ई.डी.पी. अनुभाग

इतने नरम मत बनो कि लोग तुम्हें खा जाएं ।

इतने गर्म मत बनो कि लोग तुम्हें बर्दाश्त न कर सकें ।

इतना भी आसान मत बनो कि लोग तुम्हें बेवकूफ बनायें ।

इतने पागल मत बनो कि लोग तुम्हें ढूंढ भी न पाएं ।

इतने गंभीर मत बनो कि लोग तुमसे ऊब जाएं ।

इतने भी सतही मत बनो कि लोग तुम्हें समझे भी नहीं ।

इतने महंगे मत बनो कि लोग तुम्हें बुला न सकें ।

इतने भी सस्ते मत बनो कि लोग तुम्हें धोखा दे दें !!!....

जब तक आपके पास राष्ट्रभाषा नहीं, आपका कोई राष्ट्र नहीं – मुंशी प्रेमचंद ।

महंगाई

श्रीमती पुष्पा बचवाणी
धर्मपत्नी श्री हरीश बचवाणी,
वरिष्ठ लिपिक, वित्त विभाग

हम यहाँ पर कुछ महंगाई की बाते शेयर कर रहे हैं । आज के समय में महंगाई इतनी ज्यादा बढ़ गई है । वस्तुओं की कीमते दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है । महंगाई की मार लोगों को खा रही है गरीब लोगों के लिए इनकम कम है और महंगाई ज्यादा होने की वजह से व्यक्ति अपने घर में जरूरत के सामान भी खरीदने में असमर्थ है ।

महंगाई की मार किसान और निम्नस्तर के लोगों पर बहुत ज्यादा असर डाल रही है । किसानों की जिंदगी इस महंगाई ने नर्क बना दी है महंगाई की वजह से मनुष्य अपने आपको असहाय महसूस कर रहा है महंगाई की वजह से आज के वर्तमान युग में घर चलाना बहुत ही कठीन हो गया । सरकार को महंगाई दर कम करने के लिए नियमित रुप से कुछ कदम उठाने चाहिए ताकि गरीब लोगों को होनेवाली कठिनाईयों का सामना नहीं करना पड़े सरकार को काला बाज़ारी रोकने के लिए भी प्रयास जारी रखने चाहिए ताकि काला बाजारी के चक्कर में जो महंगाई बढ़ रही है उसे कम किया जा सके । आज एक गृहिणी के लिए घर चलाना मुश्किल हो गया है हर वस्तु इतनी महंगी हो गई है कि लोगों के लिए उसे खरीदना मुश्किल हो गया है ।

देखा जाए तो पेट्रोल और डीजल के दाम भी पिछले कई दिनों से इतने तेजी पर है कि कोई व्यक्ति पेट्रोल और डीजल अपने वाहन में भरवाने से हिचकिचा रहा है इस प्रकार से बढ़ती महंगाई जिसके बीच गरीब व्यक्ति और गरीब होता जा रहा है महंगाई ने मनुष्य के जीवन की आजीविका को भी प्रभावित किया है ।

हमारी जरूरत की सभी वस्तुएँ बहुत महंगी हो रही है कभी-कभी तो वस्तु बाजार से ही गायब हो जाती है लोग अपनी पगार में सरकार से वृद्धि करने की मांग करते है तो सरकार के पास इसका कोई जवाब नहीं होता । क्योंकि देश के पास धन नहीं है । रुपये की कीमत घटती जा रही है और महंगाई बढ़ती जा रही है ।

महंगाई को खत्म करने के लिए जनता को भी सरकार का साथ देना चाहिए जनता का कर्तव्य है कि महंगी चीजों से दूर रहे उसे महंगाई से होनेवाली समस्याओं के बारे में सोचना चाहिए सरकार को काला बाजारी जमाखोरी को रोकने के लिए सख्त कानून बनाने चाहिए क्योंकि यह लोग आम जनता का बहुत शोषण करते है बाज़ार से कम कीमत पर वस्तुओं का क्रय-विक्रय करते है इससे लोगों को बहुत महंगाई झेलनी पड़ती है ।

प्रेरक प्रसंग :
इंजीनियर मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया

सुश्री गीता त्रिपाठी
डी.ई.वी.ओ., ई.डी.पी. अनुभाग

एक ट्रेन द्रुत गति से दौड़ रही थी । ट्रेन अंग्रेजों से भरी हुई थी । उसी ट्रेन के एक डिब्बे में अंग्रेजों के साथ एक भारतीय भी बैठा हुआ था ।

डिब्बा अंग्रेजों से खचाखच भरा हुआ था । वे सभी उस भारतीय का मजाक उड़ाते जा रहे थे । कोई कह रहा था, देखो कौन नमूना ट्रेन में बैठ गया, तो कोई उनकी वेश-भूषा देखकर उन्हें गंवार कहकर हँस रहा था । कोई तो इतने गुस्से में था कि ट्रेन को कोसकर चिल्ला रहा था, इस भारतीय को ट्रेन मे चढ़ने क्यों दिया ? इसे डिब्बे से उतारो ।

किंतु उस धोती-कुर्ता, काला कोट एवं सिर पर पगड़ी पहने शख्स पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा । वह शांत गम्भीर भाव लिये बैठा था, मानो किसी उधेड़-बुन में लगा हो ।

ट्रेन द्रुत गति से दौड़े जा रही थी और अंग्रेजों का उस भारतीय का उपहास, अपमान भी उसी गति से जारी था । किन्तु यकायक वह शख्स सीट से उठा और जोर से चिल्लाया ''ट्रेन रोको'' । कोई कुछ समझ पाता उसके पूर्व ही उसने ट्रेन की जंजीर खींच दी । ट्रेन रुक गईं ।

अब तो जैसे अंग्रेजों का गुस्सा फूट पड़ा । सभी उसको गालियाँ दे रहे थे । गंवार, जाहिल जितने भी शब्द शब्दकोश में थे, बौछार कर रहे थे । किंतु वह शख्स गम्भीर मुद्रा में शांत खड़ा था । मानो उसपर किसी की बात का कोई असर न पड़ रहा हो । उसकी चुप्पी अंग्रेजों का गुस्सा और बढ़ा रही थी ।

ट्रेन का गार्ड दौड़ा-दौड़ा आया, कड़क आवाज में पूछा, ''किसने ट्रेन रोकी'' । कोई अंग्रेज बोलता उसके पहले ही, वह शख्स बोल उठा :- ''मैंने रोकी श्रीमान'' । पागल हो क्या ? पहली बार ट्रेन में बैठें हो ? तुम्हें पता है, अकारण ट्रेन रोकना अपराध हैं :- ''गार्ड गुस्से में बोला'' हाँ श्रीमान ! ज्ञात है मैं ट्रेन न रोकता तो सैकड़ो लोगों की जान चली जाती ।

उस शख्स की बात सुनकर सब जोर-जोर से हँसने लगे । किंतु उसने बिना विचलित हुये, पूरे आत्मविश्वास के साथ कहा: ''यहाँ से करीब एक फरलाँग की दूरी पर पटरी टूटी हुई हैं । आप चाहे तो चलकर देख सकते है ।

गार्ड के साथ वह शख्स और कुछ अंग्रेज सवारी भी साथ चल दी । रास्ते भर अंग्रेज उस पर फब्तियां कसने में कोई कोर-कसर नहीं रख रहे थे । किंतु सबकी आँखे उस वक्त फ़टी की फटी रह गई जब वाकई, बताई गई दूरी के आस-पास पटरी टूटी हुई थी । नट-बोल्ट खुले हुए थे । अब गार्ड सहित वे सभी चेहरे जो उस भारतीय को गंवार, जाहिल, पागल कह रहे थे । वे उसकी ओर कौतूहल वश देखने लगे, मानो पूछ रहें हो आपको ये सब इतनी दूरी से कैसे पता चला ??...

गार्ड ने पूछा :- तुम्हें कैसे पता चला, पटरी टूटी हुई है ??? उसने कहा : श्रीमान लोग ट्रेन में अपने-अपने कार्यो में व्यस्त थे । उस वक्त मेरा ध्यान ट्रेन की गति पर केंद्रित था । ट्रेन स्वाभाविक गति से चल रही थी । किन्तु अचानक पटरी की कम्पन से उसकी गति में परिवर्तन महसूस हुआ । ऐसा तब होता है, जब कुछ दूरी पर पटरी टूटी हुई हो । अत: मैंने बिना क्षण गंवाए, ट्रेन रोकने हेतु जंजीर खींच दी । गार्ड और वहाँ खड़े अंग्रेज दंग रह गये, गार्ड ने पूछा, इतना बारीक तकनीकी ज्ञान ! आप कोई साधारण व्यक्ति नहीं लगते । अपना परिचय दीजिये ।

शख्स ने बड़ी शालीनता से जवाब दिया :- श्रीमान मैं भारतीय इंजीनियर - मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया....

जी हाँ ! वह साधारण शख्स कोई और नहीं ''डॉ विश्वेश्वरैया'' थे ।

प्रतीक्षा

श्रीमती ज्योति एन. भावनानी
सहायक,
सामान्य प्रशासन विभाग

क्या होती है अपनों की प्रतीक्षा ?
ये माँ-बाप से बढ़कर कौन जानता है ।
क्या होती है प्रतीक्षा की व्यथा ?
ये उनसे बढ़कर कौन जानता है ।

जाने क्यों उन की किस्मत में होती है,
जीवन भर हर पल सिर्फ प्रतीक्षा ।
बच्चों की किलकारी की प्रतीक्षा,
और उनके हंसने-बोलने की प्रतीक्षा ।

उनके चलने की प्रतीक्षा,
उनके दौड़ने की प्रतीक्षा ।
उनके बड़ा होने की प्रतीक्षा,
और उनके स्कूल जाने की प्रतीक्षा ।

स्कूल से घर लौटने की प्रतीक्षा,
अच्छे नम्बरों से पास होने की प्रतीक्षा ।
उनके उज्जवल भविष्य की प्रतीक्षा,
और अच्छी नौकरी मिलने की प्रतीक्षा ।

नौकरी से घर लौटने की प्रतीक्षा,
साथ में खाना खाने की प्रतीक्षा ।
अच्छे बहूँ-ज़ँवाई मिलने की प्रतीक्षा,
और दादा-दादी, नाना-नानी बनने की प्रतीक्षा ।

तबादला होने पर उन के वापस लौटने की प्रतीक्षा,
उनके संग ढेर सारी बातें करने की प्रतीक्षा ।
बीमारी में उनके पास बैठने की प्रतीक्षा,
और अपनी अंतिम साँसों में उन्हें देखने की प्रतीक्षा ।

लाखों एहसानों के बदले में उन्हें यूं,
बुढ़ापे तक मिलती है तन्हाई और प्रतीक्षा ।
क्योंकि आज माँ-बाप से बढ़कर प्यारी है,
सबको ये झूठी दौलत और अपनी झूठी प्रतिष्ठा ।

ज़िंदगी का सफ़र...

श्रीमती कृपा वेलानी
प्रबंधन प्रशिक्षु
भूमि अनुभाग

सफर में धूप तो बहुत होगी तप सको तो चलो,
भीड़ तो बहुत होगी नई राह बना सको तो चलो ।

माना कि मंजिल दूर है एक कदम बढ़ा सको तो चलो,
मुश्किल होगा सफर, भरोसा है खुद पर तो चलो ।

हर पल हर दिन रंग बदल रही जिंदगी,
तुम अपना कोई नया रंग बना सको तो चलो ।

राह में साथ नहीं मिलेगा अकेले चल सको तो चलो,
जिंदगी के कुछ मीठे लम्हे बुन सको तो चलो ।

महफूज रास्तों की तलाश छोड़ दो धूप में तप सको तो चलो,
छोटी-छोटी खुशियों में जिंदगी ढूँढ़ सको तो चलो ।

यही है ज़िन्दगी कुछ ख्वाब चन्द उम्मीदें,
इन्हीं खिलौनों से तुम भी बहल सको तो चलो ।

तुम ढूँढ़ रहे हो अंधेरो में रोशनी, खुद रोशन कर सको तो चलो,
कहाँ रोक पायेगा रास्ता कोई जुनून बचा है तो चलो ।

जलाकर खुद को रोशनी फैला सको तो चलो,
गम सह कर खुशियाँ बांट सको तो चलो ।

खुद पर हंसकर दूसरों को हंसा सको तो चलो,
दूसरों को बदलने की चाह छोड़ कर, खुद बदल सको तो चलो ।

प्लास्टिक है जान लेवा, इसका उपयोग बंद करें ।

गाँव

श्रीमती ज्योति एन. भावनानी
सहायक,
सामान्य प्रशासन विभाग

मेरे गाँव मेरे भारत के,
एक अद्‌भुत सी पहचान है ।
यहाँ दूर-दूर तक फैले,
खेत और खलियान है ।

यहाँ चारों ओर हरियाली है,
फूलों और कलियों की क्यारी है ।
यहाँ ऊंचे-ऊंचे पर्वत हैं,
प्रकृति के रंगीन नज़ारे है ।

यहाँ कल-कल नदियाँ बहती हैं,
मैदानों का कोई छोर नहीं है ।
बरगद, पीपल और नीम के,
बड़े ही लंबे पेड़ यहीं है ।

यहाँ की धरा की मिट्टी में,
भीनी-सी खुश्बू होती है ।
यहाँ चारों और हवाओं में,
बेहद ही ताज़गी होती है ।

कंचे, सतोलिया, लंगड़ी और पकड़म पकड़ी,
बच्चे यहाँ पर अभी भी खेलते है ।
पेड़ो की लम्बी शाखाओं पर,
अक्सर बच्चे झूलते रहते हैं ।

यहाँ चूल्हे और चक्की होते हैं,
शुद्ध और सात्विक भोजन होता है ।
गुड़, शुद्ध घी, ज्वार-बाजरा,
और सरसों का साग होता है ।

यहाँ सीधा-सादा जीवन है,
यहाँ झूठ, द्वेष और फ़रेब नहीं है ।
यहाँ कोई भी मिलावट नहीं है,
किसी चेहरे पे कोई थकावट नहीं है ।

यहाँ ट्रेक्टर और बैलगाडियाँ होती है,
खेतों में गन्ने की और अन्य फसलें होती हैं ।
बारिश, गर्मी, सर्दी और तूफानों में भी,
किसानों की खूब मेहनत होती है ।

बारिश की भीनी खुश्बू में,
बड़े-बड़े खेत लहलहाते हैं ।
हँसते गाते बच्चे पानी में,
कागज़ की नाव चलाते हैं ।

यहाँ कुँए और पानी के पनघट हैं,
मुख पे औरतों के घूँघट है ।
हाथों में घाघर और पाँव में पायल है,
शर्म और हया का आँचल है ।

यहाँ पक्षियों का कलरव होता है,
मोरों का नाच होता है ।
कठपुतलियों, बंदरों और साँपों का,
अनोखा खेल यहाँ पर ही होता है ।

यहाँ गायों के तबेले होते है,
बागों में बच्चे-बड़े झूला झूलते हैं ।
पानी के झरने झर-झर बहते हैं,
गोबर के ढेरे हर जगह लगते हैं ।

यहाँ शामें बेहद ही रंगीन होती है,
आकाश में लाली होती है ।
सूरज और धरती की,
अद्‌भुत ही संधि होती है ।

यहाँ रातों को फुर्सत होती है,
चौपालों पे महफिल होती है ।
थोड़े में तसल्ली होती है,
त्यौहारों पर मस्ती होती है ।

यहाँ नित-नित मेले लगते हैं,
मस्ती में सभी यहाँ रहते हैं ।
शान्ति में यहाँ सब जीते हैं,
मिल जुलकर आपस में रहते हैं ।

यहाँ भीड़-भाड़ और शोर नहीं है,
शहरों-सी यहाँ होड़ नहीं है ।
हमारे गाँव भारत की धरोहर हैं,
जहाँ प्रकृति की छवि मनोहर है ।

बिन गाँवों के मेरा भारत,
बिल्कुल ही अधूरा है ।
क्योंकि वास्तव में यहीं पर ही,
ज़िन्दगी का असली बसेरा है ।

कलम

सुश्री शिवानी रावल
प्रशिक्षु, पुस्तकालय

नि:शब्द हुए मौन को शब्द प्रदान करती है ''कलम''....

कलम का भौतिक मूल्य भले ही हीरे जितना अधिक ना हो, किंतु उसका प्रभाव अत्यंत गहरा होता है। कलम एक ऐसा शस्त्र है जो बिना किसी हिंसा के दुनिया में बहुत बड़ा बदलाव ला सकती है। कलम अपनी ऊर्जा से नई क्रांति ला सकती है। जिसे ''वैचारिक क्रांति'' कहते है। वैचारिक क्रांति का अर्थ ये है कि मनुष्य के विचारों में हुआ परिवर्तन। एक अच्छा लेख कोई हताश मनुष्य के हृदय में आशाओं का सिंचन कर सकता है। देशप्रेम से सभर कोई शौर्यगीत मनुष्य को वीरता प्रदान करता है। प्रकृति के वर्णन से परिपूर्ण कोई निबंध हमें ईश्वर की रची इस सृष्टि से प्रेम करवा देता है...।

लेखन कार्य एक अद्‌भुत कला है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि कई लेखकों ने अपने लेखन के माध्यम से दुनिया को बदल दिया है। महात्मा गांधी, जॉन कीट, स्वामी विवेकानंद, विलियम वर्ड्सवर्थ आदि ने अपने लेखन के माध्यम से जादू का सृजन किया है।

कलम इतनी छोटी होते हुए भी बहुत शक्तिशाली होती है। 1839 में अंग्रेजी लेखक एडवर्ड बुलवेर-लिटलन द्वारा लिखे गए एक पुस्तक में ''**कलम तलवार से अधिक शक्तिशाली है**'' इस वाक्य का इस्तेमाल किया गया था। इसे उनके नाटक रिकेल्यू में भी स्थान दिया गया था। यह नाटक मार्च 1839 में लंदन के कोवेन्ट गार्डन में दिखाया गया था। इस लोकप्रिय वाक्यांश का पहला ज्ञात संस्करण 7 वी शताब्दी ईसा पूर्व में अश्शूरी ऋषि अय्यर द्वारा किया गया था। वह वाक्यांश कुछ इस प्रकार था :-

''शब्द तलवार से ज्यादा शक्तिशाली है''

वाक्यांश कलम और लेखन की शक्ति बताता है और यह दर्शाता है कि लेखक योद्धाओं से अधिक शक्तिशाली हैं। कलम से लिखी गई किताबे हमें शिक्षा और ज्ञान देती हैं जो हमेशा हमारे साथ रहता है। जिस तरह तलवार जैसा कोई शस्त्र धारदार होता है, उसी तरह शब्द भी धारदार होते हैं। जब कलम रूपी जादू की छड़ी चलती है तो कई ऐसे शब्द बाहर आते है जो दिल को छू लेते हैं।

इस प्रकार कलम कवि की कल्पनाओं को उड़ान देती है। ये कल्पनाएं विशाल फलक पर अपने पंख फैलाती है। ये है एक कलम का महत्त्व। कलम की शक्ति अद्‌भुत, अद्वितीय और अपरंपार है।

प्रेम की राह

श्रीमती गोपी के. पांडे
वरिष्ठ लिपिक
मुख्य अभियंता विभाग

प्रकाश और आवाज के अद्‌भुत झरने पर नीचे की ओर, तूफानी सवारी करते हुएं, नन्ही आत्मा को साथ लेकर परमात्मा ने कहा, ''आओ चलें'' जब वे धरती के ऊपर, आकाश में पहुँचे तब वहाँ रुककर, शांत गुलाबी बादलों के बीच में मंडराने लगे। ''मैं एक प्यार हूँ, मेरी बच्ची, लेकिन धरती पर उस पार बहुत-सी राहों में बँट जाता हूँ'' नन्ही आत्मा ने नीचे देखा कि धरती पर दुनिया भर के लोग अलग-अलग राहों पर चल रहे थे। और हर राह प्रकाश के एक मंदिर की ओर जा रही थी, अन्दर पहुँचने पर नन्ही आत्मा ने देखा कि प्रकाश का वह मन्दिर तो लोगों के दिल में जगमगा रहा परमात्मा का प्यार ही था, आत्मा ने देखा कि लोग अलग-अलग राहों से आ रहे थे वे सब एक साथ प्रकाश की एक ही सीढ़ी से ऊपर चढ़ रहे थे, और तब नन्ही आत्मा जान गई कि यही वह जगह है जहाँ परमात्मा की ओर जानेवाली सभी राहें एक राह बन जाती है, प्रेम की राह !

नन्ही आत्मा ने सोचा, मुझे हमेशा याद रखना होगा कि इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि परमात्मा भक्ति के लिए हम किस राह पर चलते है, क्योंकि वे सभी राहे अच्छी हैं, कारगर है, जो उन्हें प्रेम की ओर ले जाती हैं।

नूर एक, दीये अनेक
ये आवाज एक, गीत अनेक
रचयिता एक, जीव अनेक
शक्ति एक, लोग अनेक
प्रेम एक राहे अनेक

ईश्वर आज अवकाश पर है

श्रीमती राजेश पी. सिंह
वरिष्ठ लिपिक
नगर विकास स्कंध

ईश्वर आज अवकाश पर है...
मंदिर की घंटी ना बजाइये...

जो बैठे हैं बूढ़े- बुजुर्ग,
अकेले पार्क में...
जाकर, उनके साथ कुछ समय बिताइये...

ईश्वर आज अवकाश पर है...
मंदिर की घंटी ना बजाइये...

ईश्वर है पीड़ित परिवार के साथ,
जो, अस्पताल में आज परेशान है...
उस, पीड़ित परिवार की जाकर कुछ मदद कर आइये...

ईश्वर आज अवकाश पर है...
मंदिर की घंटी ना बजाइये...

एक चौराहे पर खड़ा युवक, काम की तलाश में है,
उसके पास जाकर...
उसे, नौकरी के अवसर दिलाइये...

ईश्वर आज अवकाश पर है...
मंदिर की घंटी ना बजाइये...

ईश्वर है चाय की दुकान पर,
उस अनाथ बच्चे के साथ...
जो, कप प्लेट धो रहा है...
पाल सकते हैं, पढ़ा सकते हैं...
तो उसको आप पढ़ाइये...

ईश्वर आज अवकाश पर है...
मंदिर की घंटी ना बजाइये...

एक बूढ़ी औरत जो दर-दर भटक रही है,
एक अच्छा-सा लिबास जाकर उसे दिलाइये...
हो सके तो उसे किसी नारी आश्रम में छोड़ आइये...

ईश्वर आज अवकाश पर है...
मंदिर की घंटी ना बजाइये...।।

जो नहीं हो सके पूर्ण काम

कवि नागार्जुन - संकलित

सुश्री गीता त्रिपाठी
डी.ई.वी.ओ., ई.डी.पी. अनुभाग

जो नहीं हो सके पूर्ण-काम
मैं उनको करता हूँ प्रणाम ।
कुछ कुण्ठित और, कुछ लक्ष्य-भ्रष्ट
जिनके अभिमन्त्रित तीर हुए,
रण की समाप्ति के पहले ही
जो वीर रिक्त तूणीर हुए !
उनको प्रणाम !

जो छोटी-सी नैया लेकर
उतरे करने को उदधि-पार,
मन की मन में ही रही, स्वयँ
हो गए उसी में निराकार !
उनको प्रणाम !

जो उच्च शिखर की ओर बढ़े
रह-रह नव-नव उत्साह भरे,
पर कुछ ने ले ली हिम-समाधि
कुछ असफल ही नीचे उतरे !
उनको प्रणाम !

एकाकी और अकिंचन हो
जो भू-परिक्रमा को निकले
हो गए पँगु, प्रति-पद जिनके
इतने अदृष्ट के दाव चले ।
उनको प्रणाम ।

कृत-कृत नहीं जो हो पाए,
प्रत्युत फाँसी पर गए झूल
कुछ ही दिन बीते हैं, फिर भी
यह दुनिया जिनको गई भूल ।
उनको प्रणाम ।

भी उम्र साधना, पर जिनका
जीवन नाटक दुखान्त हुआ,
या जन्म-काल में सिंह लग्न
पर कुसमय ही देहान्त हुआ !
उनको प्रणाम !

दृढ़ व्रत और, दुर्दम साहस के
जो उदाहरण थे मूर्ति-मन्त ?
पर निरवधि बन्दी जीवन ने
जिनकी धुन का कर दिया अन्त !
उनको प्रणाम !

जिनकी सेवाएँ अतुलनीय
पर विज्ञापन से रहे दूर
प्रतिकूल परिस्थिति ने जिनके
कर दिए मनोरथ चूर-चूर ।
उनको प्रणाम ।

धीरे-धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय ।
माली सींचे सौ घड़ा, ऋतु आए फल होय ।।

राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी

धारा 3(3) के तहत आने वाले कागजात (ये कागजात द्विभाषी रुप में जारी किये जाएँ) :-

1. संकल्प (Resolution), 2. साधारण आदेश (General Orders) - [परिपत्र–Circular, कार्यालय आदेश – Office Orders, प्रशासनिक अनुदेश – Administrative Instructions इत्यादि], 3. नियम (Rules), 4. अधिसूचना (Notifications), 5. प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन (Administrative or other Reports), 6. प्रेस विज्ञप्ति (Press Communiques)–(सभी प्रकार के विज्ञापन/All Advertisements), 7. संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखी जानेवाली प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्ट (Administrative or other reports laid down before one house or both houses of the Parliament), 8. संसद के समक्ष प्रस्तुत किये जाने वाले सरकारी कागज–पत्र (Official Papers laid down before the Parliament), 9. संविदा (Contracts), 10. करार (Agreements), 11. अनुज्ञप्ति (Licence), 12. अनुज्ञापत्र (Permit), 13. सूचना (Notice), 14. निविदा–प्रारूप (Tender Forms)

महत्वपूर्ण नोट :

1. उपर्युक्त सभी दस्तावेज अंग्रेजी में जारी न किए जाएं बल्कि द्विभाषी अर्थात् हिंदी एवं अंग्रेजी में साथ–साथ जारी किए जाएं।

2. राजभाषा नियम 1976 के नियम–6 के अनुसार अधिनियम की धारा 3 की उपधारा (3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेजों के लिए हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग किया जाएगा और ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्तियों का यह उत्तरदायित्व होगा कि वे यह सुनिश्चित कर लें कि ऐसे दस्तावेज हिन्दी और अंग्रेजी दोनों ही में तैयार किए जाते हैं, निष्पादित किए जाते हैं और जारी किए जाते हैं।

:: क्षेत्रवार वर्गीकरण ::

'क्षेत्र क' : बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, उत्तराखंड, राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्य तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली संघ राज्य क्षेत्र।

'क्षेत्र ख' : गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमण और दीव तथा दादरा और नगर हवेली।

'क्षेत्र ग' : ऊपर 'क' एवं 'ख' क्षेत्र के राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों के अलावा अन्य सभी राज्य।

माननीय केन्द्रीय पत्तन, पोत परिवहन एवं जलमार्ग और आयुष मंत्री श्री सर्बानंद सोनोवाल द्वारा 14 और 15 मई 2022 को मुंबई में आयोजित पहले अंतर्राष्ट्रीय क्रूज (पोतविहार) सम्मेलन का उद्घाटन किया गया, जिसमें दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण के अध्यक्ष एवं सचिव शामिल हुए ।

माननीय केन्द्रीय पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री श्री जी. के. रेड्डी और तमिलनाडु सरकार के पर्यटन मंत्री डॉ. एम माती वेंतन ने मुंबई में दिनांक 14-15 मई 2022 को आयोजित अंतर्राष्ट्रीय क्रूज सम्मेलन के दौरान दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण के स्टॉल का दौरा किया जिसमें उन्हें पत्तन में उपलब्ध सुविधाओं और विकासरत परियोजनाओं से अवगत कराया गया ।

आज़ादी का अमृत महोत्सव

लहरों का राजहंस

भारत 2023 INDIA

23वाँ अंक

जनवरी, 2022 - जून, 2022

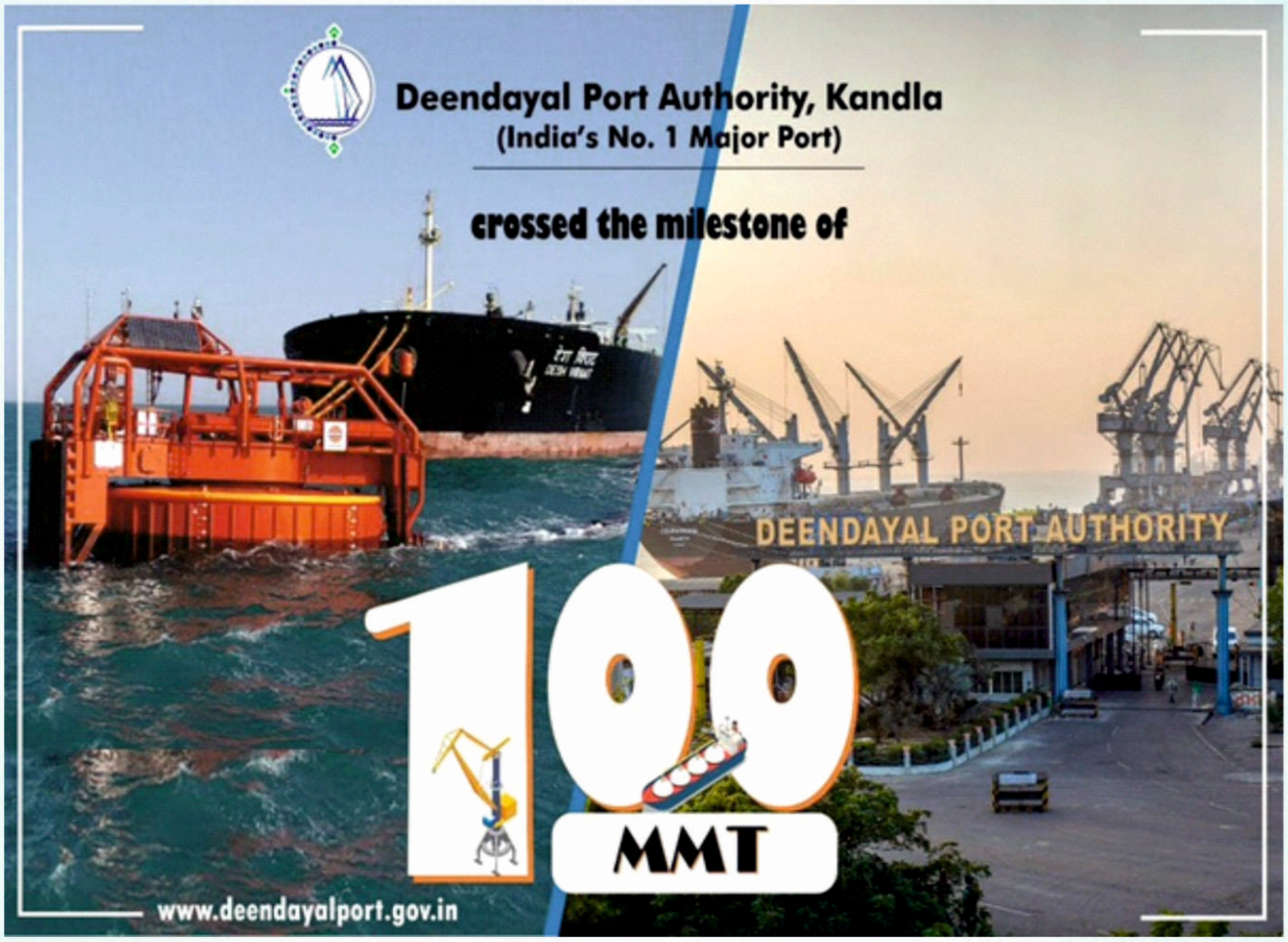

दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण, कंडला, वित्तीय वर्ष 2022-23 के दौरान तीन तिमाही अवधि के भीतर ही दिनांक 28 दिसम्बर 2022 को गत वर्ष की संगत अवधि की तुलना में 6.96% की वृद्धि दर्ज करते हुए 100 एमएमटी नौभार के प्रहस्तन का कीर्तिमान स्थापित करनेवाला पहला महापत्तन बन गया है । इस सुअवसर पर श्री एस. के. मेहता, अध्यक्ष, डीपीए एवं श्री नंदीश शुक्ल, उपाध्यक्ष, डीपीए ने सभी अधिकारियों, कर्मचारियों, श्रमिकों, ट्रेड यूनियनों एवं पोर्ट उपयोगकर्ताओं को बधाई दी ।

दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण

(भारत का नं. 1 महापत्तन)